जय जय महाश्रमण

नारीलोक

अध्यक्षीय कार्यालय :
श्रीमती कुमुद कच्छारा
अम्हेर ज्वेलरी, ऑफिस नं. 6
लक्ष्मी भुवन, आनन्दजी लेन
रसिकलाल ज्वेलर्स के सामने
एम.जी. रोड़, घाटकोपर (ई)
मुम्बई - 77
मो. : 9833237907
e-mail : kumud.abtmm@gmail.com

अंक 245 | पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राजस्थान) | नवम्बर 2018

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं
कामयाबी के गीत गुनगुनाएं, नव-सृजन के दीप जलाएं

प्रिय बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

मंदिरों की नगरी कहलाने वाली चेन्नई की धरा पर हमारे मन-मंदिर के महावीर आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति अनन्त आस्था और श्रद्धा-भक्ति का उमड़ता हुआ सैलाब का प्रत्यक्ष साक्षी बना अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का 43वां राष्ट्रीय अधिवेशन **'संकल्प'**। रामलक्ष्मी पेरेडाइज कल्याण मण्डपम् का खचाखच भरा ऑडिटोरियम गवाही दे रहा था हमारे शाखा मंडल की बहनों की जागरूकता, कर्मठता व श्रमनिष्ठा का। सचमुच अखिल भारतीय **तेरापंथ महिला मंडल के इतिहास में संभवतः पहली बार 250 शाखा मंडल की लगभग 1200 बहनें राष्ट्रीय महिला अधिवेशन में संकल्पित हुई।** चौंकानेवाली बात तो यह थी कि इस बार सिर्फ पदाधिकारी बहनों को ही भाग लेने का निर्देश होने के बावजूद भी भारी संख्या में बहनों की उपस्थिति रही। इतना ही नहीं कई शाखा मंडल पहली बार अधिवेशन में सम्मिलित हुए तो कई बहनें पहली बार अधिवेशन की साक्षी बनी। इस वर्ष लगभग 20 नये शाखा मंडलों का गठन हुआ। उसमें से लगभग 12 शाखा मंडल अधिवेशन में सहभागी बने। यह सब गुरु की असीम अनुकम्पा एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति एवं बहनों द्वारा की गई संगठन यात्रा की ही फलश्रुति रही यों कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

बहनों, हम अपने भाग्य की जितनी सराहना करें उतनी कम है क्योंकि देश-विदेश से आई हजारों बहनों का हौंसला बुलंद करने तथा उनके भीतर अनन्त ऊर्जा का संप्रेषण करने के लिए ममतामयी मां असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने स्वयं मौसम की प्रतिकूलता व अस्वस्थता के बावजूद लगभग 2 किलोमीटर का विहार करके कार्यक्रम स्थल पर पधारकर सान्निध्य प्रदान करवाया। हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे। कहते हैं गुरु की करूणा अपरम्पार होती है इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया 5 अक्टूबर के स्वर्णिम प्रभात में। मौसम की प्रतिकूलता के कारण अधिवेशन के समापन सत्र एवं प्रतिभा पुरस्कार समारोह का आयोजन प्रवचन पांडाल में संभव नहीं हुआ तब करूणा के महासागर परम पूज्य गुरुदेव ने स्वयं के प्रवास स्थल के परिसर में इस आयोजन का स्वर्णिम अवसर प्रदान कर हमें कृतार्थ कर दिया। उस समय मैंने महसूस किया कि वहाँ उपस्थित हजारों बहनों के हृदय का हर अणु गुरु के उपकार का सुमिरण कर रहा था। अधिवेशन में आनेवाली समस्त प्रतिनिधि बहनों के आकर्षण का केन्द्र होते हैं गुरु, जिनके अमृत वचनों से वे स्वयं में धन्यता का अनुभव करती है। साध्वी प्रमुखाश्रीजी का निकटतम सान्निध्य पाकर वो निहाल हो जाती है और अपने मन की बात माँ के आंचल में अर्पित करके हल्की हो जाती है।

बहनों, मुझे विशेष गौरव का अनुभव हुआ आपके कामयाब कदमों की कहानी को कानों से सुनकर। सात्विक प्रसन्नता हुई आपके कृर्तत्व की रिपोर्ट देश-विदेश में प्रचारित-प्रसारित होते देखकर। मैं अभिभूत हुई अधिवेशन में आप सभी से आत्मीय स्नेह और वात्सल्य पाकर। इस अधिवेशन में आप सभी ने जिस अनुशासन एवं शालीनता का परिचय दिया तथा प्रत्येक सत्र में समय पर उपस्थित रहकर कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया वह वास्तव में काबिले तारीफ था। बहनों, उस समय आपके भीतर में जिज्ञासाओं का ज्वार उमड़ रहा था मगर समयाभाव में हम उसका समुचित समाधान नहीं दे पाये हो, मंत्री प्रतिवेदन में यदि आपके कार्यों का सही उल्लेख नहीं किया हो या किसी शाखा मंडल का नामोल्लेख भी नहीं कर पाये हो तो क्षमा चाहती हूँ। आशा करती हूँ कि शक्तिपुंज परम पूज्य गुरुदेव से

अध्यक्षीय

शक्ति प्राप्त कर आपने अपनी सोच को व्यापक बना ली होगी। छोटी-छोटी बातों में उलझकर दिल को मायूस नहीं करेंगी। साध्वीप्रमुखाश्रीजी की सीख को सदैव स्मृति में रखें कि असफलता ही सफलता की श्रेष्ठ सीढ़ी है। बहनों, माना कि आगे बढ़ना मुश्किल है मगर पीछे हटना तो नामुमकिन है। कहते हैं

हौंसले बुलंद हो तो मंजिले आसान होती है,
मिलती है कामयाबी अगर, इन्सान की ख्वाहिशें तूफान होती है।

गुरु सन्निधि में हमने वर्षभर की कामयाबी का जश्न मनाया और संकल्पित हुए नव सृजन के लिए। दीपमालिका का उज्जवलतम अवसर हमारे सामने है। नारीजाति के उद्धारक भगवान महावीर एवं मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवनवृत्त को याद कर हमारे भीतर और बाहर दोनों को आचार-विचार-व्यवहार और अध्यात्म से उन्नत बनाकर नैतिकता की रोशनी से रोशन करने का प्रयास करें। नारी जाति के पुनरुद्धारक आचार्यश्री तुलसी के जन्म दिवस पर उनके असीम उपकारों का स्मरण करते हुए उन्होंने महिलाओं को जो विकास का राजमार्ग दिखलाया उस पर निरंतर आगे बढ़ने का संकल्प करें। छोटे-छोटे व्रतों को जीवन में स्वीकार कर उनके सपनों को साकार करें।

बहनों, रोशनी का रथ खड़ा है सामने, आओ मिलकर कदम बढ़ाएं,
प्रगति के नये आचार-विचार की, आंगन में रंगोली सजाएं,
ज्ञान के नये अभिप्राय और सुख शांति के नये उपाय अपनाएं
बीते लम्हों की कामयाबी के, हरपल मधुर गीत गुनगुनाएं
नूतन वर्ष पर नई आशा, नई उमंग से नव-सृजन के दीप जलाएं।।

आपकी अपनी

कुमुद कच्छारा

उदारमना तातेड़ परिवार

(धानीन - उदयपुर - मुंबई)

आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत
जैन स्कोलर योजना के स्थायी कोष हेतु
श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती दाखीबाई प्रियधर्मी स्व. श्री नाथुलालजी तातेड़
की पुण्यस्मृति में श्राविका गौरव-श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती प्रकाशदेवी मदनजी,
श्रीमती कान्ता-महेन्द्रजी, श्रीमती शर्मीला-निर्मलजी तातेड़ द्वारा

51 लाख रूपये

की राशि की घोषणा की गई।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से
तातेड़ परिवार का हार्दिक आभार एवं उज्जवल भविष्य की मंगलकामना

ऊर्जावाणी

हमारे देश की नयी पीढ़ी दोहरे जीवन मूल्यों से गुजर रही है। एक ओर उसके पास अपनी सांस्कृतिक विरासत है तथा दूसरी ओर है भोगवाद की चकाचौंध। इस चकाचौंध में त्याग की चेतना ओझल हुई है और युवापीढ़ी मूल्यहीनता के अंधेरे कुएं में उतर रही है। भोगवादी मनोवृत्ति से जुड़ी उसकी आकांक्षाएं उसे चरित्र और नैतिकता के रास्ते से भटका रही है। अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान का आमंत्रण है इस पीढ़ी के सजग दावेदारों को। वे जीवन की रिक्तता को महसूस करे और उसे मूल्यों की मशाल से जगमगा दे। ऐसा करके ही युवा पीढ़ी अपने उज्जवल चरित्र की छाप छोड़कर भारतीय संस्कृति के गौरव को अक्षुण्ण रख सकती है।

–आचार्य श्री तुलसी

आध्यात्मिक जीवन बहुत ऊँचा है। सब लोग ऐसा जीवन नहीं जी सकते। जो लोग अध्यात्म को सर्वथा अस्वीकार कर देते है वे नितान्त भौतिकवादी होते है। उनके सामने लक्ष्य होता है खाओ, पीओ, मौज करो। वे लोग शरीर के स्तर पर जीते हैं उनकी चेतना पर सघन आवरण रहता है। इस संदर्भ में भगवान महावीर को प्रस्तुत किया जाय तो वे कहते हैं ''सुख न सत्ता में है, न काम है, न अर्थ में है। सुख है अपने आप में होना। स्व के प्रति जागरूकता का जो क्षण है सही अर्थ में वही सुख का क्षण है। शेष सारी कल्पनाएं भ्रम हैं, झूठे आश्वासन है और भटकाने वाले चौराहे है''।

–आचार्य श्री महाप्रज्ञ

जैन वाङ्मय का एक सुन्दर सूक्त है – अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य – आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता और विकर्ता है। जब आत्मा ही कर्ता और विकर्ता है तो प्रश्न हो सकता है कि भाग्य क्या है? वास्तव में देखा जाए तो भाग्य और पुरुषार्थ, दोनों में गहरा संबंध है। अतीत का पुरुषार्थ ही वर्तमान व भविष्य का भाग्य बन जाता है अर्थात् पुरुषार्थ से ही भाग्य का निर्माण होता है। जैन दर्शन में जो भाग्यवाद है उसे कर्मवाद के रूप में भी देखा जा सकता है। कर्म और भाग्य एक ही है। जैसा कर्म होता है, वैसा ही भाग्य बन जाता है। इसलिए दो प्रकार का भाग्य होता है – सौभाग्य और दुर्भाग्य। मैं जैन दर्शन के कर्मवाद या भाग्यवाद को एक विशेष शैली में भी प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरे चिंतन से भाग्य को चार भागों में बांटा जा सकता है – ● ज्ञानात्मक भाग्य ● स्वास्थ्यात्मक भाग्य ● प्रतिष्ठात्मक भाग्य ● भावात्मक भाग्य।

–आचार्य श्री महाश्रमण

किसी भी क्षेत्र में दक्षता हासिल करने के लिए एकाग्रता की साधना अपेक्षित है। एकाग्रता का अर्थ है एक आलंबन पर मन का केन्द्रीकरण। एकाग्रता के अभाव में दैनिक चर्या के छोटे-बड़े कार्य भी अव्यवस्थित हो जाते है फिर किसी क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि तो हो ही कैसे सकती? पांडवों और कौरवों की परीक्षा में अर्जुन को छोड़कर कोई भी लक्ष्य-वेध की स्वीकृति नहीं पा सका, क्योंकि वे अपने निशाने के प्रति एकाग्र नहीं हो पाए। वैज्ञानिक जितनी नई खोजें करते हैं, नए आविष्कार करते हैं, उनकी पृष्ठभूमि में एकाग्रता की बहुत बड़ी भूमिका है। बिना एकाग्र हुए कोई भी व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता।

–साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा

करणीय कार्य - नवम्बर

प्यारी बहनों,

पिछले बारह माह में हमने Empowerment Express के माध्यम से सशक्तिकरण का सफर सम्पन्न कर अहिंसा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अब मंजिल की दिशा में सही राह पर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है जुड़ाव-Connection। जुड़ाव न केवल बाहरी दुनिया से अपितु भीतर का जुड़ाव। क्योंकि भीतर से जुड़े बिना किसी भी क्षेत्र में सही परिणाम नजर नहीं आता। जैसे मोबाइल को चार्ज (Charge) करने के लिए समय-समय पर चार्जर (Charger) से और Charger को Electricity से Connect करना पड़ता है ठीक वैसे ही सुखमय व शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए हमें समय-समय पर जुड़ना होगा जीवन के विभिन्न पहलुओं से। इस वर्ष की हमारी थीम (Theme) है

WE connect

Communicate Collaborate Create

संवाद सहयोग सृजन

We अर्थात Women Empowerment जिसका सफर हम तय कर चुके हैं और Connect अर्थात जुड़ाव। अगर महिला सशक्तिकरण जीवन के हर पहलू के साथ गहराई से जुड़ जायेगा तो लक्षित मंजिल तक पहुँचने में समय नहीं लगेगा।

बहनों, इस माह हम जुड़ेंगे रिश्तों से। रिश्तों का संसार बहुत व्यापक है और उसमें भी सास-बहू का रिश्ता एक अहम् रिश्ता है। कहते हैं शादी से पहले लड़के-लड़कियों की कुंडली मिलाने के बजाय सास-बहू की कुंडली मिला लेनी चाहिए। हम चिंतन करें कि आखिर क्यों बनी ऐसी धारणा? क्या हम इस धारणा को Disconnect करके सही Connection बिठा सकते हैं सास-बहू के रिश्ते में? इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए नवम्बर माह में आयोजित करे :-

Connection with Relation

सास - बहू सम्मेलन

रिश्ता पुराना सोच नई : आओ बिठाएं कनेक्शन सही

- पारिवारिक स्तर पर करें चर्चा-परिचर्चा
  - बहुरानी और सास : कैसे बढ़ाएं आपसी विश्वास।
  - मीठे वचन : जीते मन।
  - एक दूसरे का मजबूत साथ : बन जाए सब बिगड़ी बात।
- आध्यात्मिक स्तर पर कुछ सीखें-सिखाएं, गोचरी पानी व सेवा की बात समझे और समझाएं
  - बहनों, चातुर्मास समाप्ति की ओर है, शादी-विवाह का समय आनेवाला है। ऐसे में हम चारित्रात्माओं की मार्गवर्ती सेवा व गोचरी-पानी में कैसे जागरूकता रखें तथा गोचरी के संदर्भ में सूक्ष्म जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षण सत्र का आयोजन करे।
- प्रायोगिक स्तर पर करें प्रयोग
  - आपस में सामंजस्य बिठाने वाले कुछ खेल या गतिविधि (Game/Activity) का आयोजन करें तथा आदर्श सास-बहू जोड़ी नं. 1 को पुरस्कृत करें।

इस माह का संकल्प - प्रतिदिन ॐ जय तुलसी की पांच माला फेरे।

WE connect के अन्तर्गत महिला मंडल के आगामी माह के करणीय कार्य

दिसम्बर - Connection with Authentic Happiness : वास्तविक खुशियां अपनाएं, जीवन बगिया सरसाएं

कार्यशाला का आयोजन करें

जनवरी - Connection with Devotion : संगीतमय सार्थक भक्ति, जगाएं आत्मशक्ति

''गीत ये निर्माण के'' पुस्तिका के आधार पर भजन मंडली प्रतियोगिता का आयोजन करे। प्रतियोगिता के नियम नारीलोक के आगामी अंक में प्रेषित किये जायेंगे। गीतों को कंठस्थ करना अनिवार्य है।

फरवरी - Connection with Wellness : स्वास्थ्य जीवन की असली पूंजी, सुखी जीवन की सही कुंजी

विश्व कैंसर दिवस के उपलक्ष में पूरे फरवरी माह में अपनी-अपनी सुविधानुसार कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य प्रशिक्षण एवं परीक्षण कैंप का आयोजन करें।

मार्च - Connection with Empowered Mind : सशक्त नारियां देश की तकदीर, बदल देगी कल की तकदीर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में जैन-अजैन समस्त समाज की अग्रणी महिलाओं के साथ शिखर वार्ता का आयोजन करें।

अप्रैल - Connection with Technology : कार्यशाला बने सटीक, सीखें नई-नई तकनीक

कार्यशाला का आयोजन करें

नोट : समस्त कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी समय-समय पर नारीलोक के माध्यम से प्रेषित कर दी जायेगी।

कर्म निर्जरा का श्रेष्ठ अनुष्ठान - आओ करें दस प्रत्याख्यान

बहनों, नवरात्रि में आपने अपने-अपने क्षेत्र में दस प्रत्याख्यान करवाने का प्रयास किया होगा। यदि किसी ने नहीं किया हो तो आगामी चैत्र माह की नवरात्रि तक प्रत्येक भाई-बहन को इससे जोड़ने का प्रयास करें। संभवतः इसे क्रमशः सविधि करने का प्रयास हो।

दस प्रत्याख्यान विधि

1. नवकारसी - सूर्योदय के पश्चात् एक मुहूर्त (48 मिनिट) तक कुछ नहीं खाना।
2. प्रहरसी - एक प्रहर दिन चढ़े तब तक कुछ नहीं खाना।
3. पुरिमार्ध - आधे दिन तक (दो प्रहर) कुछ नहीं खाना।
4. एकासन - दिन में सिर्फ एक बार, एक जगह बैठकर एक घंटे से अधिक नहीं खाना।
5. एकलठाणा - दिन में एक बार, एक जगह मौन पूर्वक एक घंटे से अधिक नहीं खाना।
6. नीवी (निर्विगय) - एकासन में दूध, दही आदि छः विगय का त्याग।
7. आयंबिल - एक धान्य (अलूणा व लूखा) एक घंटे से अधिक बैठकर नहीं खाना।
8. उपवास - तिविहार या चौविहार त्याग करना।
9. अभिग्रह - अभिग्रह की अवधि सूर्योदय से 12 बजे तक है, तब तक न फले तो पारणा करने में आपत्ति नहीं है।
10. चरम प्रत्याख्यान - दिन अस्त होने के 48 मिनिट पूर्व खाने-पीने का त्याग।

श्रावक को वर्ष में एक बार दस प्रत्याख्यान अवश्य करना चाहिए।

दिशा निर्देश

- तपोमहायज्ञ आयंबिल अनुष्ठान के अंतर्गत प्रत्येक शाखा मंडल के अध्यक्ष/मंत्री अपने-अपने क्षेत्र में 15 अप्रैल तक अधिक से अधिक आयंबिल करवाकर संख्या महामंत्री कार्यालय में भेजे। अधिक जानकारी हेतु श्रीमती नीतू ओस्तवाल 09461531077 से सम्पर्क करें।
- आगामी 22 नवम्बर 2018 को चातुर्मासिक पक्खी प्रतिक्रमण का तीसरा अवसर हमारे सामने है। ज्यादा से ज्यादा भाई-बहन, कन्या-किशोर व बालक-बालिका को सामूहिक प्रतिक्रमण के क्रम से जोड़ें।
- अधिक से अधिक बहनें व कन्याएं शनिवार की सामायिक के क्रम से भी जुड़ें।
- नारीलोक प्रश्नोत्तरी के लिए ''महाप्रज्ञ प्रबोध'' पुस्तक जैन विश्व भारती, लाडनूं में उपलब्ध है। श्रीमती विजयश्री - 09772561866 से सम्पर्क करके आप मंगवा सकते है।
- आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी का अवसर सामने है, अधिक से अधिक महिलाएं व कन्याएं महाप्रज्ञ प्रबोध तथा महाप्रज्ञ अष्टक्रम कंठस्थ करने का प्रयास करें। जुलाई माह में इसके प्रश्नमंच का आयोजन करें।
- 43वें राष्ट्रीय महिला अधिवेशन में ''संकल्पों की सौगात करे आत्मसात'' कार्ड जो आपको दिया गया था। उसे अपने-अपने क्षेत्र में प्रिंट करवाकर या झेरोक्ष करवाकर अधिक से अधिक महिलाओं व कन्याओं से भरवायें। कार्ड संकल्प लेने वाली बहनों के पास ही रखे। नाम एवं फोन नम्बर की सूची आप स्थानीय रिकार्ड के लिए रखें तथा केवल संख्या महामंत्री कार्यालय में भेजे।
- साध्वीप्रमुखाश्रीजी द्वारा रचित गीतों का एक लघु संकलन ''गीत ये निर्माण के'' भी अधिवेशन में आपको दिया गया उसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार कर बहनों व कन्याओं को कंठस्थ करवाये। इसकी CDR फाइल के लिए श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा 09619927369 से संपर्क करें।
- आचार्य महाश्रमण फिजियोथेरेपी सेंटर के संचालन हेतु आपको मई माह की नारीलोक में निर्देश दिए गए हैं उसके अनुरूप आप अध्यक्षीय कार्यालय में आवेदन भेजकर स्वीकृति प्राप्त कर लें और अपने-अपने क्षेत्र में इसके संचालन का निर्णय लें।
- आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल के निर्माण का क्रम बहुत ही अच्छा चल रहा है। मगर बहनें ध्यान दें इसके रख-रखाव का एवं साफ-सफाई का दायित्व भी हमारा होता है। इसके प्रति जागरूक रहें। 15 अगस्त व 26 जनवरी जैसे अवसरों पर ध्वजारोहण अवश्य करें।
- बहनों, नारीलोक का कोई भी कार्य सिर्फ मूल्यांकन की होड़ में आकर नहीं करे। निःस्वार्थ भाव से संस्था के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए बहनों में भी कार्यक्रम से कुछ वास्तविक बदलाव आये उस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए स्थानीय स्तर पर बहनों की हर दृष्टि से अनुकूलता के आधार पर कार्य करें।

आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत तत्त्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन पाठ्यक्रम की वर्ष 2018 की परीक्षाओं हेतु देशभर में 87 परीक्षा केन्द्रों से 1432 परीक्षार्थियों ने फार्म भरे है। इस वर्ष अजमेर, भुज-कच्छ, गंगावटी, झकनावद, कामरेज, राजराजेश्वरी नगर, सेलम, टोलीगंज, विजयनगरम ये नौ परीक्षा केन्द्रों की स्थापना हुई।

वर्ष 2018 की परीक्षायें दिनांक 18 व 21 दिसम्बर तद्नुसार मंगलवार व शुक्रवार को मध्यान्ह 1 बजे से आयोजित की जायेगी। आपके क्षेत्र में विराजित चारित्रात्मायें यदि इन परीक्षाओं में भाग लेना चाहते हो तो आप राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती मंजु भूतोड़िया - 09312173434 से सम्पर्क करें।

कन्या मण्डल

करणीय कार्य - नवम्बर

बेटियों के बढ़ते कदम - फहराएं विकास के परचम

प्यारी बेटियों

सादर जय जिनेन्द्र !

एक कन्या घर की दहलीज का दीपक है जो घर और आंगन दोनों को प्रकाशित करता है। एक संस्कारी कन्या से न केवल उसके पिता का घर अपितु भविष्य में जिस घर में वह कदम रखने वाली है उस पति का घर भी प्रकाशित होता है। आप सभी उम्र की उस दहलीज पर खड़ी है जहाँ से उठने वाला आपका अगला कदम ससुराल के लिए होगा। अतः आइये हम कुछ तैयारी करते हैं भावी जीवन को सुखमय बनाने की। आपको एक कार्यशाला का आयोजन करना है और प्रशिक्षक (Motivator) को बुलाकर प्रशिक्षण लेना है उन बातों का जिससे एक '**GIRL**' के रूप में आयेगा आपके व्यक्तित्व में निखार-बनायेगा भावी जीवन को गुलजार।

कार्यशाला : 'बेटी के संस्कार, महकाएं परिवार'

प्रशिक्षण के बिन्दु :

G - Stay Grounded

Degree के अहंकार में न करे घर के काम का इन्कार।

I - Learn to Ignore

किसी भी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाये बात को आई गई करे।

R - Relations Matter

रिश्तों को सहज कर रखे, तोड़ना आसान है जोड़ना मुश्किल।

L - Be large Hearted

जीवन में सबकुछ मनचाहा नहीं मिलता है अतः जो मिला उसे खुले दिल से स्वीकार करें।

रिश्तों की अहमियत समझते हुए '**स्वस्थ परिवार**' पर **Slogan प्रतियोगिता** का आयोजन करे। श्रेष्ठ तीन को केन्द्र में 30 नवम्बर तक भेजें।

आपकी दीदी
मधु देरासरिया

जैन स्कॉलर के तीसरे बैच का शुभारंभ

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कॉलर योजना के नये सत्र की शुरूआत 24 मार्च से 4 अप्रैल 2019 से जैन विश्व भारती लाडनूं में होने जा रही है। आचार्य श्री महाश्रमण की कृपा से इस योजना के अन्तर्गत दो सत्र में 28 बहनें अपना अध्ययन पूरा करके जैन स्कॉलर की डिग्री ले चुकी है। नये सत्र के लिए इच्छुक एवं ज्ञान पिपासु बहनें अपने नाम शीघ्रातिशीघ्र अपने क्षेत्र के अध्यक्ष-मंत्री को लिखवाएं।

इस पाठ्यक्रम में अध्ययन करने वाले भाई-बहनों की अर्हता इस प्रकार है -

- जैन विश्व भारती द्वारा संचालित जैन दर्शन में B.A. या M.A. किया हुआ हो या उसके अंतिम वर्ष में हो।
- जैन विद्या की नौवीं कक्षा तक अध्ययन किया हुआ हो या अंतिम वर्ष में हो।
- महिला मंडल द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन पाठ्यक्रम का छः वर्षीय अध्ययन पूरा कर लिया हो या उसके अंतिम वर्ष में हो।
- विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति भी संपर्क कर सकते है।

पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष
- कर्मग्रंथ भाग 1 और 2
- द्रव्य मीमांसा (पुस्तक-द्रव्य की अवधारणा)
- संस्कृत-व्याकरण एवं वाक्य रचनाबोध
- प्राकृत-व्याकरण एवं सूत्र

संपर्क सूत्र-

9328072984
श्रीमती कनक बरमेचा, सह निदेशिका

9314194215
श्रीमती पुष्पा बैद, संयोजिका

43वां राष्ट्रीय महिला अधिवेशन 'संकल्प'

3, 4, 5 अक्टूबर 2018 - चैन्नई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के लिए विस्मित करने वाले क्षण तब होते हैं, जब एक राष्ट्रीय आह्वान पर हजारों की संख्या में बहनें स्नेह, सेवा, समर्पण, सौहार्द भाव से संस्कारों की संपदा को परिपुष्ट करने के लिए परम पूज्य गुरूदेव की की पावन सन्निधि में उपस्थित हो जाती है। ऊर्जा, शक्ति, प्रगति का प्रतीक केसरिया परिधान पहने जब बहनें ममत्व की शीतल चांदनी में अभिस्नात होने के लिए मातृहृदया महाश्रमणीजी की ममतामयी सन्निधि में उपस्थित होती है और कर्तव्य व दायित्व बोध की सीख से अनुप्रणित होती है तब भीतर में संकल्प की चेतना स्वतः जाग जाती है।

विकास के शिखरों पर आरोहण करने के जज्बे से भरी हुई नारी-शक्ति का नयनाभिराम दृश्य देखने को मिला, माधावरम, चैन्नई मंदिरों की पुण्य धरा पर जहाँ देश-विदेश से समागत 1200 बहनों ने पूज्यवरों की सन्निधि में 43वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'संकल्प' में संकल्पों की सौगात को आत्मसात कर उसे सफलतम बनाया।

प्रथम दिवस (उद्घाटन सत्र) 3 अक्टूबर 2018

पूर्ण जोश उत्साह से लबरेज अनेक प्रांतों से समागत बहनें कृर्तत्व की कलम से विकास के नये अध्याय लिखने वाली राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, चीफ ट्रस्टी श्रीमती सायर बैंगानी, ऊर्जावान महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया एवं अभातेममं की टीम के साथ संकल्प रैली के रूप में मानवता के तीर्थधाम संघ शिरोमणि आचार्य श्री महाश्रमणजी के श्री चरणों में उपस्थित हुई। राष्ट्रीय कार्यसमिति की बहनों ने

'आया गुरुवर के दरबार खुशियां दिल में छा रही।
रचना महाविदेह सी, मनहारी आ मन ने भा रही।।

गीत के द्वारा श्रद्धा समर्पित की। श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अधिवेशन के विधिवत उद्घाटन की घोषण करते हुए आचार्य प्रवर के सम्मुख ''संकल्पों की सौगात करे आत्मसात'' को समर्पित करते हुए ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य की आराधना हेतु संकल्पों के बारे में निवेदन किया और ये संकल्प प्रत्येक बहन की पहचान बनें ऐसा मंगल आशीर्वाद पूज्यप्रवर से मिले, इसकी कामना की। गुरुदेव ने महिला समाज पर करूणा की और आशीष की अजस्त्र धारा बहाते हुए सभी बहनों को संकल्प स्वीकार करवाते हुए फरमाया कि जीवन में संकल्प शक्ति के द्वारा ही आगे बढ़ा जा सकता है और तेरापंथ धर्मसंघ का महिला समाज सशक्त बनें, धर्म संघ की प्रभावना करें। **''संकल्प''** अधिवेशन विकास के नये-नये आयाम प्रस्तुत करें ऐसा मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया। गुरुमुख से मंगलमय मंगलपाठ सुनकर उपस्थित नारी-समाज आह्लाद से ओतःप्रोत हो गया।

आचार्य प्रवर से आशीर्वाद प्राप्त कर सभी बहनों ने असाधारण साध्वीप्रमुखा महाश्रमणीजी के वात्सल्य भरे पावन सान्निध्य को प्राप्त किया। ''ममता मूरत, समता सूरत आया थारे द्वार'' गीत से रा.का.स. ने श्रद्धार्पण प्रस्तुत किया। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने संकल्प की सफलता के लिए मंगल आशीष प्रदान करवाते हुए फरमाया कि महिला शब्द आधी दुनिया का प्रतिनिधित्व करने वाला है। गृहिणी और सशक्त कार्यकर्ता इन दो रूपों के साथ स्वयं को संजोकर दोनों की धुरी बनती है। अपनी क्षमता और शक्ति का परिचय देती है। संकल्प का छोटा सा रेशमी धागा व्यक्ति को बहुत आगे तक ले जा सकता है और जब उसमें आचार्यों के आशीर्वाद का समावेश हो जाता है तो संकल्प अधिक पुष्ट होकर सामने आता है। अभातेममं और उसके शाखा मंडल अच्छे उपक्रमों के द्वारा आध्यात्मिक-सामाजिक कार्य कर रहा है। छोटे-छोटे संकल्पों से महिला समाज के विकास की राह को प्रशस्त करना है। संकल्प चेतना को पुष्ट करने के साथ-साथ संस्था, समाज व परिवार को पुष्ट बनाना होगा। यही इस त्रिदिवसीय अधिवेशन की निष्पत्ति होगी।

उद्घाटन सत्र के द्वितीय चरण में रामलक्ष्मी पेरेडाइज के प्रांगण में संरक्षिका श्रीमती तारा सुराणा ने संकल्प अधिवेशन की उपसंपदा बहनों को दिलाई। रा.का.स. के प्रेरणागीत 'हो संकल्प सत्य शिव सुंदरं' के स्वरों से वातावरण संकल्पमय हो गया। चैन्नई महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कमला गेलड़ा ने सभी का स्वागत किया।

अध्यक्षीय आह्वान में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने योगक्षेम से संकल्प तक की यात्रा को एक सुखद अनुभूति बताया। चुनौती की चट्टानों को चीरकर संकल्प की धरती पर बहनों ने पैर जमाये हैं। अभातेममं के तत्वावधान में

बहनें गुरू का आशीर्वाद पाकर कहीं भी रूकी नहीं, मुडी नहीं, थकी नहीं, चलती रही। और मंडल को नई ऊचाईयाँ प्रदान करवाने में योगभूत बनी। बहनों के श्रम की प्रशंसा करते हुए नारीलोक में दिए जाने वाले कार्यों पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रेरणा दी तथा कहा -सभी को संकल्प पत्र में जो संकल्प दिये है उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में भरवाना है। साथ ही महाप्रज्ञ प्रबोध का स्वाध्याय भी चालू करना है ताकि नारीलोक प्रश्नोत्तरी में ज्यादा से ज्यादा सहभागिता हो सके। ज्ञान के प्रकाश से सत्य की राह पर चलकर आत्मोत्थान करना ही सबका ध्येय होना चाहिए।

उपलब्धियों के दर्पण में कर्मठ, ऊर्जावान महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने संस्था की चारों योजनाओं के अन्तर्गत किये जाने वाले कार्यों के बारे में बताया। एक वर्ष के सफर में 14 फिजियोथेरेपी सेंटर, 15 कन्या सुरक्षा सर्किल का निर्माण, मोबाईल एप का निर्माण, वेबसाइट नवीनीकरण, 100 मोटीवेटर तैयार करना, तीन-तीन विश्व कीर्तिमान स्थापित करना आदि के बारे में बताया। महामंत्री ने कहा संकल्प अधिवेशन एक पड़ाव है, मंजिल नहीं है हमें अभी और कार्य करना है। इस चरण का श्रीमती रमन पटावरी ने कुशल संचालन किया।

द्वितीय सत्र (साधारण सभा)

सेलम महिला मंडल के मंगल स्वरों से इस सत्र का शुभारम्भ हुआ। श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अध्यक्षीय उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि 12 सितम्बर 2017 को कोलकाता की धरा पर जो दायित्व सौंपा गया था, उसको निभाने में आप सभी का सदैव सहयोग रहा। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने संस्थागत विभिन्न बातें, रास्ते की सेवा, गणवेश आदि के बारे में भी बहनों को जानकारी दी। इसके साथ ही सदन से पंच मंडल के गठन की स्वीकृति भी ली। कोषाध्यक्ष श्रीमती सरिता डागा ने सदन के समक्ष सन् 2017-2018 वर्ष का आय-व्यय ब्यौरा प्रस्तुत किया।

महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने एक-एक शाखा-मंडल के श्रम सिंचन को मंत्री-प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया। 'निर्माण' एक नन्हा कदम स्वच्छता की ओर, ईको फ्रैंडली दिवाली, We Can रैली, आयंबिल अनुष्ठान, प्रतिक्रमण कार्यशाला आदि के अंतर्गत विशिष्ट कार्य करने वाले शाखा-मंडलों को पुरस्कृत करते हुए उन्हें साधुवाद दिया। राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा ने **CNGEP - C-Circular, N-Nomination, G-General Meeting, E-Election, P-President** के द्वारा बहनों को संवैधानिक जानकारी दी तथा आकर्षक ढंग से संस्था संचालन का प्रशिक्षण दिया।

इस सत्र का कुशल संचालन श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा ने किया। इस सत्र के दूसरे चरण में चैन्नई महिला मंडल द्वारा 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ तथा नये दौर की नारी लिखेगी नई कहानी' विषय पर सुंदर प्रस्तुति दी।

तृतीय सत्र (4 अक्टूबर 2018)

विषय - शक्ति जागरण और नियोजन में संकल्प का महत्व

असाधारण साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी के मुखारविन्द से महामंत्रोच्चार के साथ इस सत्र की मंगल शुरुआत हुई। 'गुरुदेव आपके चरणों से हम ऐसी ऊर्जा पाएं संकल्प सफल हो जाये' गीत के सुमधुर स्वरों से चैन्नई महिला मंडल ने मंगलाचरण किया।

'संकल्प' अधिवेशन संयोजिका रा.का.स. श्रीमती उषा बोहरा ने अपनी बात रखते हुए कहा कि पूज्यवर के इस चातुर्मास से विभिन्न कार्यों से जुड़कर संघ और संस्था की सेवा करने का अवसर मिला, यह उनके लिए सौभाग्य की बात है। प्रधान न्यासी श्रीमती सायर बैंगानी ने सभी को स्नेह संपोषण देते हुए कहा कि आचार्य तुलसी ने महिला समाज को तिमिर से उठाकर रोशनी के रथ में बिठा दिया और इस रथ की सारथी बनी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, जिन्होंने उस रथ की गति को कम नहीं होने दिया। संकल्प कोई नारा नहीं है, मन की आवृत्ति है, पौरूष का तंत्र है, विश्वास का मंत्र है, मानव का गर्व है, हर क्षण का पर्व है, रोज की कमाई है, इसके सहारे स्वयं का, समाज का, संघ का विकास करे।

साध्वीश्री जिनप्रभाजी ने दिशा-दर्शन प्रदान करते हुए कहा कि हम प्राणवान, शक्ति संपन्न धर्मसंघ के सदस्य है और उसी धर्मसंघ की छाया में अभातेममं का अधिवेशन है। शक्ति जागरण के संदर्भ में आपने अपनी बात को आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में कहा कि विश्व का हर पदार्थ शक्ति संपन्न होता है, चाहे चेतन हो या अचेतन। कोई भी पदार्थ शक्तिहीन नहीं होता है। चिन्तनीय विषय बन जाता है कि शक्ति सब में है, तो जागरण की जरूरत क्यूं ? लेकिन समझने योग्य बात यह है कि हर व्यक्ति अपनी शक्ति का जागरण नहीं करता या फिर उसका सम्यक प्रयोग नहीं करता है। महिलाओं ने अपने शील, श्रद्धा, संस्कारों की शक्ति से न केवल अपना, अपितु समाज, संघ सभी को प्राणवान बनाया है।

आज ऐसी ही महिलाओं की आवश्यकता है जो निर्भिक, सूझबूझ की धनी, विवेक सम्पन्न हो। जिनकी ज्ञान की चेतना जागृत हो। साध्वीश्रीजी ने ज्ञान के क्षेत्र में बहनों का विकास हो इस दृष्टि से विशेष प्रेरणा देते हुए फरमाया कि जैन दर्शन गहन दर्शन है, इसे सूक्ष्म गहराई से समझना होगा। इसके लिए बहनें तेरापंथ दर्शन, तत्त्वज्ञान, जैन स्कोलर से संकल्प के साथ जुड़े और अपना विकास करे।

इसी क्रम में सुप्रसिद्ध मोटीवेटर श्रीमती नीरजा मलिक ने प्रशिक्षण देते हुए कहा कि हम कहीं भी जाते हैं उससे पहले हमारे प्रंकपन वहाँ पहुँच जाते है। जीवन में सबसे अनमोल चीज है प्राणी मात्र के प्रति प्रेम भाव। इसी प्रेम भाव के कारण 20 वर्षों से कैंसर के मरीजों में मोटीवेशन से नई आशा, नई उम्मीद का संचार कर रही है। श्रीमती मलिक ने कहा कि जिंदगी में दो ही रास्ते सामने आते हैं- एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक उन रास्तों में से सही रास्ता चुनना हमारे हाथ में है। अपने जीवन के अनुभूत किस्सों को बताते हुए बहनों को प्रेरित किया कि जिंदगी में कितनी भी बड़ी मुसीबत क्यों न आए उससे हार न मानें, चट्टान की तरह उसके सामने खड़े होकर मुकाबला करेंगे तो मुसीबत भी हार जायेगी। अगर आपकी अपने गुरु में, भगवान में, स्वयं में आस्था है विश्वास है तो जो जिंदगी मिली है उससे भय को दूर भगा दीजिये, सकारात्मक बनिये, खुद के लिए अवसर ढूंढिये, विजय आपकी ही होगी।

सरस्वती वरद् पुत्री असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि संकल्प की शक्ति सबसे बड़ी होती है, बशर्ते उसके प्रति निष्ठा हो। अपनी क्षमता को जाने, पहचाने। हमारी चेतना में कितनी संभावनाएं हैं, क्या हम उसे उजागर कर बढ़ा सकते हैं। आचार्य तुलसी ने महिला जाति की शक्ति का अंकन करने के लिए उनकी सुषुप्त चेतना को जगाया। इसी चेतना से संकल्प को बल मिला। सफलताओं का कमल कीचड़ में ही खिलता है यानि कैसी भी स्थिति हो, उसे हमें सहन करते हुए आगे बढ़ना है। जो समस्या है, उसके मूल को पकड़ा जाये, जड़ से ही खत्म किया जाये और जिन पर चिन्तन-मनन, विचार-विमर्श से हल पाया जा सके, वैसा कदम उठाना चाहिए। सुकरात की तरह तीन बिन्दुओं पर ध्यान दें, जो कहना है वह सत्य है या नहीं, अच्छी है या बुरी, उपयोगी है या नहीं। अगर ऐसा होता है तो हम अपनी शक्ति के जागरण व नियोजन में श्रेष्ठतम बन सकते हैं।

इस सत्र का कुशल संचालन उपाध्यक्ष श्रीमती सुनीता जैन ने किया। इस सत्र के दूसरे चरण में श्रीमती तरूणा बोहरा ने कलर के आधार पर ग्रुप बनाकर Treasure Hunt का संचालन किया और बहनों ने उत्साह से भाग लिया।

चतुर्थ सत्र

विषय - जगाएं संकल्प अवांछनीय प्रवाह को रोकने का

इस सत्र का शुभारम्भ आराध्य अभ्यर्थना के मंगल स्वरों से कोयम्बतूर महिला मंडल द्वारा हुआ।

साध्वी सुमति प्रभाजी ने बहनों को विशेष प्रशिक्षण देते हुए फरमाया कि घर की ओजोन परत को सुरक्षित रखना प्रत्येक गृहिणी का दायित्व होता है। धैर्य, सहनशीलता, समझदारी के साथ जीवन को सही राह पर गति देते रहना चाहिए। पैर जमीन को छूते रहें और हाथ आसमां को छूने को आतुर रहे।

श्री के.सी. जैन ने स्वास्थ्य प्रशिक्षण देते हुए बताया कि अनिता मुरजानी भारतीय मूल की हाँगकाँग प्रवासी महिला जिन्हें कैंसर था, वह मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। अंतरिक्ष में उनका वार्तालाप उनके पिता से होता है, जहाँ उसने अपने भय को बीमारी का कारण पाया। 30 घंटे बाद चमत्कार, आत्मा पुनः शरीर में लौट आई, डॉक्टर भी आश्चर्यचकित हो गया। भय से वह ऊपर उठ गई और पूर्ण स्वस्थ भी हो गयी। इससे श्री जैन ने स्पष्ट किया कि आप किसी भी परिस्थिति में भय को अपने ऊपर हावी न होने दें। सकारात्मक भावों को अपने मन-मस्तिष्क में जगह दें। हमें आत्मा को भी समझना होगा। जो बीमारियाँ साइकोसोमेटिक हैं तो अंदर से उसका ईलाज करना होगा। तनाव के कारण व्यक्ति बीमार होता है, उसके कारण को खोजें और उनके निवारण के लिए अध्यात्म की शरण जरूरी है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों को जीवन में उतारें, भीतर परिवर्तन आयेगा तो हमारे बाहर भी परिवर्तन होगा। इससे हमारी मानसिक क्षमता का विकास होगा। जिससे तन व मन स्वस्थ होगा।

शासन गौरव साध्वी श्री कल्पलता जी ने विशेष प्रेरणा देते हुए फरमाया कि सृष्टि संकल्पजा है, ऐसा माना गया है। आज का हमारा तेरापंथ महिला समाज आचार्य तुलसी के संकल्प की सृष्टि है जिसे विवेक संपदा से पोषित किया गया। संकल्प की शक्ति अद्भुत होती है। महिलाओं में आज भी संस्कारों की संपदा है, किंतु दृष्टिकोण बदल गया है। उस पर

स्वार्थ का मलबा चढ़ गया है, उसे उतारने का संकल्प लेना है। संकल्प के प्रति हमारा दृष्टिकोण स्वस्थ होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट हो मनोबल मजबूत हो। संकल्प सत्यं, शिवं, सुंदरं रूप में होना चाहिए। ''अपनी धूल-मूल आशाओं को विश्वास बनाकर तो देखो, चिंताओं की धरती पर उल्लास उगाकर तो देखो। मधुरिम हो तो दौडी आयेगी, आवाज लगाकर तो देखो, कैलाश झुकायेगा माथा तुम पाँव बढ़ाकर तो देखो।'' इस पद्य के साथ बहनों में संकल्प की ऊर्जा का संचार किया।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने पावन पाथेय प्रदान करवाते हुए फरमाया कि धनुष से निकला तीर लौटकर नहीं आता, वैसे ही अवसर भी वापिस नहीं आते है। हमारे पास आज अवसर है अच्छा करने का, यही संकल्प हमें अवसर का लाभ उठाने का अवसर देता है। आगमों में सूक्त है लोक अनुस्रोत में चलने को सहज, सुखकर मानते हैं, प्रति स्रोत को दुष्कर मानते है। भोगवादी संस्कृति में अध्यात्म का चिंतन प्रतिस्रोत में बहने का चिंतन है। आचार्य तुलसी ने जब बदलाव का आह्वान किया, वह प्रतिस्रोत का ही मार्ग था। हमारी महिलाएं धीरे-धीरे प्रतिस्रोत में बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रही और उन्होंने अपनी पहचान बनाई। हमारे हौंसले बुलंद होने चाहिए, अनुकरण न करते हुए कुछ अलग करने का साहस करे। जो प्रतिस्रोतगामी होते हैं वे अतीत को बदले या ना बदले किंतु अच्छे भविष्य का निर्माण अवश्य कर सकते हैं। सपने वे होते हैं जिन्हें पूरा किये बिना नींद नहीं आती न कि जो नींद में देखे जाते हैं। अभातेममं के इस संगठन के माध्यम से बहिनें अपनी शक्ति को महाशक्ति बनाकर विषमय संसार को अमृतमय बना सकती है। हमारा जीवन एक नोटबुक की तरह है, उसमें चाहे तो अच्छा पन्ना भर सकते है या फिर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींच सकते हैं। सोचना आपको है क्या करना है, किस ओर बढ़ना है। वाहवाही के लिए कार्य न करके ऐसे कार्य करना है जिससे ज्यादा से ज्यादा व्यक्तियों को लाभ मिल सके। बहनों आपको विद्वान नहीं, ज्ञानी बनना है। आत्म निरीक्षण, आत्म परीक्षण, आत्म विश्लेषण करते हुए, स्वयं का, संस्था का, संघ का विकास करना है। इस सत्र का सफल संयोजन श्रीमती निधि सेखानी ने किया।

पंचम सत्र

विषय :- कैसे बढ़े मौलिक चिंतन और निर्णायक क्षमता

इस सत्र का शुभारंभ 'जिन शासन के अंबर में भरे उड़ान' गीत के समवेत स्वरों से बीकानेर महिला मंडल के द्वारा हुआ। ग्यारह महिने में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के निर्देशन में 'Empowerment' Express में जो यात्रा की, उस यात्रा में क्या-क्या पाया इसकी सुंदर प्रस्तुति मुम्बई महिला मंडल द्वारा दी गयी। इसी क्रम में बैंगलोर महिला मंडल द्वारा पूज्य प्रवर के आगामी चार्तुमास बैंगलोर में, सभी को पधारने का आमंत्रण गीत के द्वारा दिया।

साध्वी श्री शशिप्रभाजी ने मंगल उद्बोधन में कहा कि कामयाबी की प्रथम शुरुआत संकल्प के साथ ही होती है। संकल्पों की सदैव स्मृति रहनी चाहिए। उनमें नैरन्तर्य बना रहना चाहिए, जिससे हमें कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़े और हम विकास के शिखर पर आरोहण कर सके।

संकल्पों के साथ मौलिक चिंतन कैसे बढ़े विषय पर ट्रस्टी श्रीमती सूरज बरड़िया ने गोल्ड के द्वारा बहनों को प्रशिक्षण दिया। सोना खरीदते वक्त उसकी शुद्धता की तरफ ध्यान देते हैं वैसे ही रक्षिता, रोहिणी, संचिता कही जाने वाली हमारी महिला शक्ति Pure बने। संस्कारों की धरोहर के साथ आगे बढ़े। हमेशा स्वयं को याद रखे 'मात्र अनुकरण की वृत्ति न अपनाये उसके पीछे के तथ्य को, सत्य को समझें। हमारी बहनों के पास बच्चों को विभिन्न क्लासेज में भेजने का समय है पर ज्ञानशाला के लिए नहीं, इस तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बच्चे हमारी संस्कृति को आगे लेकर जाने वाले हैं उनकी सुरक्षा करना महिलाओं की जिम्मेदारी है। हमें Genious, Original, Logical, Devotation को अपने जीवन में उतारना है तभी हम मौलिक चिंतन के साथ अपनी निर्णायक क्षमता का विकास कर सकते हैं।

शासन गौरव साध्वी श्री कल्पलताजी ने दिशा बोध प्रदान करते हुए फरमाया व्यक्ति ऊँचा तो उठता है, किंतु अहंकार में आकर नीचे गिर जाता है। बहनों ! अगर ऊँची उड़ान भरनी है तो अहंकार को छोड़ना होगा। विनय, समर्पण, श्रद्धा की उजली चादर से स्वयं को आच्छादित कर संकल्पों की सीढ़ी पर आरूढ़ होकर अपने चिंतन में मौलिकता लाएं। मौलिकता से फर्श से अर्श तक का सफर आसान बन जाता है। विकास की धुरी के कुछ मापदंड होते हैं। स्वयं पर नियंत्रण करने की कला हो अपनी तुलना दूसरों से न करें, क्योंकि आप Unique है। अपने परिवार को संस्कारों से संवर्धित करें। आज जो दो पीढ़ियों के बीच खाई बन रही है उसे पाटने का कार्य करें। आप जिस संस्था से जुड़कर कार्य कर रहे हैं, उसके संविधान का एक-एक अक्षर आपके लिए प्रणम्य हो, उसी के अनुरूप आपकी कार्यशैली हो, इस संकल्प के साथ आप

The Front News — आपकी आवाज़

Chennai- 03/04/05 अक्टूबर 2018
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद जी कच्छारा एवं महामंत्री निलम जी सेठिया एवं चेन्नई महिला मंडल के अध्यक्ष कमला गेलडा और मंत्री शांति दुधोडिया एवं अधिवेशन संयोजिका श्रीमती उषाजी बोहरा और श्रीमती माला जी कात्रेला के साथ सम्पूर्ण भारत से पधारी हुई महिला शक्ति द्वारा 43 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के सफलतम आयोजन व महिलामंडल के देशव्यापी कार्यक्रमों हेतु The Front News की ओर से बधाई शुभकामनाएं मंगल-कामनाएं • सुरेन्द्र मुनोत, कोलकाता

आधी दुनिया नारी का प्रतिनिधित्व करने वाली - साध्वी प्रमुखाश्री

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का 43वां राष्ट्रीय अधिवेशन

जयपुर, 11 अक्टूबर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का 43वां राष्ट्रीय अधिवेशन चेन्नई के माधवरम में तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें आचार्य महातपस्वी आचार्य श्रीमहाश्रमण के सान्निध्य में व कतृत्व की कलम से विकास के स्वस्तिक रचने वाली राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में पूरे भारतवर्ष से मंडल की सदस्याओं ने भाग लिया व वर्षभर में किए कार्यों का ब्यौरा रखा। इस मौके पर चीफ ट्रस्टी सायर बेंगाणी, राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा सहित अभातेमम टीम के साथ संकल्प रैली के रूप में पूज्य आचार्यप्रवर का मंगल पाठ किया।

इस मौके पर महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने अधिवेशन से पहले उद्बोधन में कहा कि आधी दुनिया का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी संकल्प की डोर से बंधकर परिवार, समाज, संस्था का विकास करें। संकल्पों का दौर -कदम सृजन की ओर उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ प्रेरणा गीत के साथ रा.का.स. के संकल्पित स्वरों के साथ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अधिवेशन के विधिवत उद्घाटन की घोषणा की।

संरक्षिका तारा सुराणा ने सभी को संकल्पों की उन सम्पदा दिलवाई। तेमम चेन्नै अध्यक्ष कमला गेलडा ने सभी का स्वागत किया। महामंत्री ने उपलब्धियों के दर्पण में संस्था को मिले 'क्रांति सम्मान', तीन-तीन विश्व कीर्तिमान, फिजियोथेरेपी सेंटर, कन्या सुरक्षा सर्किल आदि के बारे में बताया। बहनों के श्रम को नमन करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की। अधिवेशन का दूसरे सेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा की अध्यक्षता में 43वीं साधारण सभा का आयोजन किया गया। मंत्री प्रतिवेदन के रूप में उपलब्धियों के दस्तावेज को सदन के समक्ष प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने सन 2017 -2018 के आय-व्यय का ब्यौरा दिया। इस सत्र के दूसरे चरण में संस्थाओं की योजनाओं के अंतर्गत विशिष्ट कार्य करने वाले शाखा मंडलों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। वीना बैद ने इसका संचालन किया।

तृतीय सत्र
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
43वां राष्ट्रीय महिला अधिवेशन
SAVE GIRL CHILD
पंचम सत्र
आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना

आगे बढ़े, संस्था का उत्तरोत्तर विकास करने में हेतुभूत बनें। इस सत्र का सुंदर संचालन श्रीमती जयश्री जोगड़ ने किया।

षष्ठम् सत्र 5 अक्टूबर

विषय : जलती रहे संकल्पों की ज्योत

परम पूज्य गुरुदेव के प्रवास स्थल में आयोजित अंतिम सत्र में आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अपने भावों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि अभातेममं के 43वें अधिवेशन ''संकल्प'' के समापन की इस भोर में श्रद्धा के मजीठी रंग से रंगा हुआ हृदय का अणु-अणु गुरुवर के उपकार का स्मरण कर रहा है। आपश्री के इंगित की आराधना करके हम अपने जीवन की हर सांस का समर्पण श्री चरणों में करें। 12 सितम्बर 2017 का पावन दिन जब दायित्व ग्रहण करने के साथ ही आपश्री ने मंगलपाठ द्वारा एक सुरक्षा कवच का निर्माण किया और हमारे लिए जो ऊर्जा संप्रेषित की जिसके द्वारा हमारी बहनें भी निरन्तर गतिशील रहीं। जीवन के ये अनमोल क्षण हैं जो संघ की सेवा का द्विवर्षीय दायित्व मिला और उसी समय संकल्प लिया कि निःस्वार्थ भाव से, अनासक्त भाव से कार्य करूंगी और आपकी कृपा से कार्य किया। उपलब्धियों के प्रतिबिंब में स्वयं का अक्ष कहीं भी नहीं है, सब आपका ही है और ऊर्जावाहिनी शाखा मंडलों का श्रम है, मैं मात्र निमित्त हूँ। इस अवसर पर आपश्री से यही आशीर्वाद चाहती हूँ कि जो संकल्प आपश्री के मुखारबिंद से यहाँ उपस्थित बहनों ने संकल्प स्वीकार किये हैं, उनकी अनुगूँज देशभर की समस्त महिला समाज में हो और हम अपना आध्यात्मिक विकास कर सके।

महामंत्री ने गुरुचरणों में उपलब्धि की आवाज को निवेदित किया। तेरापंथ दर्शन व तत्त्वज्ञान के 87 परीक्षा केन्द्रों में 800 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी जिसमें 745 संभागी उत्तीर्ण हुए। इस वर्ष 13 जैन स्कॉलर व अब तक कुल 28 जैन स्कॉलर बने। आश्रव-संवर की 9 पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। तेरापंथ दर्शन, तत्वज्ञान का Online प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ है। लाखों की संख्या में सामायिक संकल्प हुए वर्षभर के लिए, एवं 50000 साधक चातुर्मासिक पक्खी से जुड़े। पूज्यप्रवर के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में वृहद आयंबिल अनुष्ठान में 30,000 श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने आयंबिल तप से श्रद्धार्पण किया गुरु चरणों में। इसी के साथ महामंत्री ने कहा कि विशिष्ट पहचान का साक्षी बन रहा है वार्षिक प्रतिवेदन जिसमें शाखा मंडलों के बढ़ते पदचाप की आहट इतिहास बनकर समा गई है। इसी प्रतिवेदन को गुरूचरणों में समर्पित किया चीफ ट्रस्टी श्रीमती सायर बैंगानी और राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने।

मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा - 'भारतीय संस्कृति में महिलाओं का बहुत सम्मान रहा है। भगवान महावीर ने महिला समाज को भी आत्मोदय का पूर्ण अधिकार दिया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल समाज की महिलाओं का एक बड़ा संगठन है। इसके द्वारा अनेक कार्य किए जा रहे है। महिलाएं अपने दायित्व के प्रति जागरूक रहें, यह अपेक्षित होता है। वे स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति के लिए जागरूक रहें। अपने परिवार में सत्संस्कारों को परिपुष्ट बनाने का दायित्व भी महिला का होता है। तेरापंथ के इतिहास में अनेक प्रसंग मिलते है कि एक महिला ने अपने आचार कौशल, व्यवहार कौशल और बुद्धि कौशल से अपने ससुराल को धर्म की श्रद्धा से अनुप्राणित बना दिया। महिलाओं का आचरण पूरे समाज के लिए आदर्श बने, इसके लिए वे आडम्बर और प्रदर्शन से दूर रहें और परिवार में सत्संस्कारों का सिंचन करती रहें।'

ऊर्जा प्रदाता परम पूज्य आचार्य प्रवर की ऊर्जावाणी के अनमोल स्वर

43वें राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन सत्र में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया - 'आज अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के अधिवेशन के समापन का दिन है। महिला मंडल ने कुछ बहुत अच्छा कार्य किया है और कर रहा है। तत्त्वज्ञान का जो विकास हो रहा है, वह मानो अतिविशिष्ट कार्य हो रहा है। आज से पचास-साठ वर्षों पहले हमारे श्रावक समाज में संभवतः अनेक लोग तत्त्वज्ञान के अच्छे जानकार थे। बाद में मध्यकाल में ऐसा लगने लगा कि आजकल तत्त्वज्ञान बहुत कम हो गया है। जहाँ तक मेरा आकलन है, अब वह बात नहीं है कि पहले तत्त्वज्ञान था और आज तत्त्वज्ञान नहीं है। इसमें उपासक श्रेणी ने भी बड़ा कार्य किया है। कई उपासक-उपासिकाओं में अच्छा तत्त्वज्ञान देखा जा सकता है। महिला मंडल ने भी तत्त्वज्ञान, जैन स्कॉलर आदि का जो उपक्रम शुरू किया, उसमें कितने-कितने लोग जुड़े

हुए हैं। इस उपक्रम से भी तत्त्वज्ञान का विकास हुआ है। यह एक बहुत ही सुन्दर कार्य महिला मंडल द्वारा किया जा रहा है। जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय के द्वारा भी तत्त्वज्ञान के प्रसार में योगदान दिया जा रहा है। ज्ञानशाला के द्वारा भी जैन विद्या का अध्ययन होता है। यों तो विकास का अवकाश रहता ही है, फिर भी तेरापंथ समाज में ज्ञान विकास का जो उपक्रम चल रहा है, वह संतोषजनक है। ज्ञान विकास के इस उपक्रम में एक भागीदार तेरापंथ महिला मंडल है। बाइयों में शनिवार की सामायिक का क्रम चलते रहना चाहिए। परिवारों में शराब, गुटखा आदि नशा न आए, न रहे, ऐसा प्रयत्न बाइयों को करना चाहिए। परिवारों में कलहमुक्तता रहनी चाहिए। बच्चों में धार्मिक संस्कार प्रवर्द्धमान रहें, इस दृष्टि से भी बाइयों को सजग रहना चाहिए। बच्चों का ज्ञानशाला के साथ जुड़ाव रहे तो परिवारों में धार्मिकता का अच्छा निर्माण हो सकता है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल तेरापंथ समाज की एक अच्छी संस्था है, जिसके माध्यम से बाइयों को विकास का मौका मिल रहा है और कितनी कमियों से बचने का मौका भी मिल रहा है। बाइयों को सम्यक्त्व दीक्षा भी ग्रहण करनी चाहिए। सम्यक्त्व दीक्षा मानों एक सुरक्षा कवच है। बाइयों में वक्तृत्व कला का विकास भी प्रतीत हो रहा है। महिला मंडल में खूब सक्षमता, धार्मिकता बनी रहे, मनोबल बना रहे। महिला मंडल के द्वारा खूब अच्छा कार्य होता रहे।

ऐसा ऊर्जामय आशीर्वाद प्राप्त कर संपूर्ण महिला समाज आह्लादित हो श्रद्धा के साथ गुरु चरणों में नतमस्तक हो गया।

इस अवसर पर पूज्यवरों की रास्ते की सेवा ''भावना'' हेतु निर्मित, देवराज मूलचंद नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर द्वारा प्रदत्त बस का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने किया। संकल्प अधिवेशन संकल्पों की निष्पत्तियों के साथ उजागर हुआ। क्या किया, क्या करणीय है, इसकी समीक्षा इस अधिवेशन में हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष और महामंत्री ने इस अधिवेशन में संभागी शाखा मंडल की बहनों से व्यक्तिगत संवाद स्थापित कर उनकी शंकाओं का समाधान किया। पूज्यवरों की असीम अनुकंपा से अनुप्राणित हो सभी बहनों ने अपने जीवन में वांछनीय परिवर्तन लाने का संकल्प लेकर इस अधिवेशन की थीम 'संकल्प' को सफल बनाया।

जिनके सहयोगी हाथ हमारे राष्ट्रीय अधिवेशन में बने सफलता के आधार

विशिष्टतम सहयोगी

श्रीमती लहरी बाई स्व. हमेरमलजी धाकड़ चेरिटेबल ट्रस्ट
शासनसेवी श्री रमेश कुमार-कमलादेवी धाकड़, श्री निलेश-पूजा धाकड़ (शिशोदा, मुंबई)
आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, चैन्नई

विशिष्ट सहयोगी

श्री मदनचंद-सरोज, आलोक-उषा, अजित-वंदना दुगड़ जौहरी (सरदारशहर, मुंबई, सूरत)
श्री संचियालाल-चंचला, करणीसिंह-मंजु, प्रकाश-रीता (सरदारशहर, चैन्नई, हैदराबाद)
श्री मनोहरलाल चंपालाल डागा (देवगढ़, मुंबई)
शासनसेवी श्री पन्नालाल-सोभागजी बैद (राजलदेसर, जयपुर)
श्री दौलत-सरिता डागा (श्रीडूंगरगढ़, जयपुर)
श्रीमती कमलादेवी गिडिया एवं परिवार (बीदासर, बैंगलोर, चैन्नई)
श्री कमल -मधु दुगड़ (कोलकाता)

विशेष सहयोगी

श्रीमती आशादेवी श्री विमलराज सिंघवी (जोधपुर), श्री मूलचंद गौतमचंद सालेचा (जसोल)
श्रीमती तुलसी देवी-श्री हनुमंतराज मेहता (जोधपुर), श्रीमती कमलादेवी-श्री राज कोठारी (चुरु-जोधपुर)
तेरापंथ महिला मंडल, चैन्नई

विनम्र आभार

43वां राष्ट्रीय अधिवेशन ''संकल्प'' संकल्पों की निष्पति के साथ परिसंपन्न हुआ। आध्यात्म के महासूर्य परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्री चरणों में अनंत अनंत कृतज्ञता जिनके ओजस्वी आभावलय में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का यह आयोजन संकल्पों की सौगातों से परिपूर्ण रहा। नतमस्तक है मुख्य मुनिप्रवर के चरणों में जिन्होंने अपने उद्‌बोधन से नारी समाज में नये उत्साह का संचार किया। कृतज्ञता के स्वर अर्पण है श्रद्धेया मातृहृदया असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के चरणों में जिनके मार्गदर्शन ने महिला समाज के विकास के नवीन मार्ग प्रशस्त किये। भावभरी कृतज्ञता साध्वीश्री विश्रुतविभाजी एवं साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी के प्रति जिनकी समय-समय पर प्रेरणा व मार्गदर्शन से महिला समाज में नवस्फूर्णा रहती है। हार्दिक कृतज्ञता मंडल की आध्यात्मिक पर्यवेक्षिका शासन गौरव साध्वी श्री कल्पलताजी के प्रति जिनकी पावन सन्निधि, चिंतनशील उद्‌बोधन व मार्गदर्शन से ''संकल्प'' अधिवेशन ने सफलता की सीढ़ी पर आरोहण किया। कृतज्ञता साध्वीश्री जिनरेखाजी, साध्वीश्री शशिप्रभाजी एवं साध्वीश्री सुमतिप्रभाजी के चरणों में जिनके प्रेरक व विशेष प्रशिक्षण से महिला समाज लाभान्वित हुआ। कृतज्ञता समस्त चारित्रात्माओं व समणीवृंद के प्रति जिनके सान्निध्य व मार्गदर्शन से महिला समाज निरंतर विकास के पायदान पर अग्रसर है।

पूज्यवरों के आशीर्वाद के साथ यदि संगठन का टीमवर्क हो तो प्रत्येक आयोजन सफलतम होता है, ऐसा ही टीमवर्क रहा ''संकल्प'' अधिवेशन में जिसकी बदौलत यह अधिवेशन सफलतम रहा। आभार अभातेममं की संरक्षिका, चीफ ट्रस्टी व समस्त ट्रस्टमंडल के प्रति जिनका सहयोग, अनुभव व मार्गदर्शन आयोजन के दौरान मिला। अ.भा.ते.म.मं. के सभी पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, योजना प्रभारी, क्षेत्रिय प्रभारी, विशेष आमंत्रित सदस्यों के प्रति भी हृदय से आभार जिन्होंने अधिवेशन के दौरान व्यवस्था के प्रत्येक कार्यों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। आप सभी की श्रमशीलता से यह भव्य आयोजन सुगमता से परिसंपन्न हुआ। विशेष आभार हमारी सभी शाखा मंडल की प्रतिनिधि बहनों का जिनकी प्रत्येक सत्र में जागरूकता के साथ उपस्थिति एवं सहभागिता ने आयोजन को सफल बनाया।

हार्दिक आभार अधिवेशन संयोजिका श्रीमती उषा बोहरा, श्रीमती माला कातरेला, चैन्नई महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती कमला गेलड़ा, मंत्री श्रीमती शांति दुधोड़िया व पूरी टीम के प्रति जिनके सक्रिय सहयोग ने अ.भा.ते.म.मं. को पूर्णतया निश्चिंत किया। आभार श्री रमेशजी खटेड़, श्रीमती संगीता खटेड़ का जिनका मंच व्यवस्था में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। हृदय से आभार मोटीवेटर्स का जिन्होंने बहनों को विशेष प्रशिक्षण से Motivate किया

अधिवेशन के दौरान भावना सेवा हेतु बस प्रदान करने हेतु श्री देवराज मूलचन्द चेरिटेबल ट्रस्ट का भी हृदय से आभार ज्ञापित करते है।

इस आयोजन को जनव्यापी बनाने में सहयोगी रहे मीडिया JTN, MNBG, संघ संवाद, प्रेरणापथ, How Now 4 U एवं अन्य सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अपनी भूमिका निभाने वाले सोशल मीडिया ग्रुप के प्रति हार्दिक आभार। ''संकल्प'' अधिवेशन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जिनका भी सहयोग प्राप्त हुआ सभी के प्रति अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल परिवार की ओर से हार्दिक आभार व धन्यवाद।

सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का गौरवशाली सम्मान सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार वर्ष 2018 तेरापंथ समाज की दो प्रतिभा सम्पन्न बहनों को पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में प्रदान किया गया। बगड़ी निवासी चैन्नई प्रवासी श्री संतोष कुमार कातरेला की धर्मपत्नी साहित्य के क्षेत्र में विशेष कार्यरत विशिष्ट प्रतिभा की धनी संकल्प अधिवेशन की संयोजिका श्रीमती माला कातरेला को तथा भीनासर निवासी मुंबई प्रवासी श्री पानामलजी बैद की पुत्रवधु एवं उपासक प्राध्यापक श्री निर्मल जी नौलखा की सुपुत्री श्रीमती रश्मि पुनीतजी बैद ने वैज्ञानिक क्षेत्र में विशेष उपलब्धि हासिल करके महिला समाज का गौरव बढ़ाया। ऐसी विशिष्ट प्रतिभा को सम्मानित कर अभातेममं ने सात्विक गौरव की अनुभूति की। **सीतादेवी सरावगी चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता के प्रति अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से हार्दिक धन्यवाद।**

जैन स्कॉलर कार्यशाला एवं दीक्षांत समारोह चैन्नई में

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कॉलर परियोजना के त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के द्वितीय बैच की अंतिम कार्यशाला का प्रारम्भ दिनांक 22 सितम्बर 2018 को चैन्नई में शांतिदूत परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में हुआ।

जैन विद्वान/विदुषी तैयार करने हेतु यह उपक्रम जुलाई 2011 में केलवा से प्रारंभ हुआ। निदेशिका श्राविका गौरव डॉ. मंजु नाहटा एवं उपनिदेशिका श्रीमती कनक बरमेचा के मार्गदर्शन में यह परियोजना निरन्तर गतिशील है। इस कार्यशाला में तेरह विद्यार्थियों (बारह बहनें एवं एक भाई) ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्य में डॉ. मंजु नाहटा ने कर्मग्रन्थ एवं श्रीमती सुषमा आंचलिया ने संस्कृत का अध्ययन करवाया। संस्कृत भारती के प्रशिक्षक श्री गणपति महोदय ने संस्कृत सम्भाषण का अभ्यास करवाया। कार्यशाला की सम्पूर्ण व्यवस्था में संयोजिका श्रीमती पुष्पा बैद, श्रीमती प्रमिला बैद, श्रीमती शशि नाहर एवं श्रीमती सुमन नाहटा, लाडनूं का विशेष योगदान रहा।

दिनांक 30 सितम्बर 2018 को मध्यान्ह में आचार्य श्री महाश्रमण एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी की सेवा उपासना का विशेष अवसर प्राप्त हुआ। स्कॉलर बहनों ने गीतिका के रूप में अपने भाव प्रस्तुत किए तथा अपने अनुभव भी सुनाए। गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि इस प्रकार के उपक्रम से स्वयं के ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम तो होता ही है, जैन शासन और तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना का भी उपक्रम साथ में जुड़ता है। यह उपक्रम ज्ञान चेतना को पुष्ट करने वाला है। आगम में बताया गया – तीन प्रकार के चक्षु होते हैं – एक चक्षु छद्मस्थ मनुष्य, दो चक्षु देवता और तीन चक्षु ज्ञान–दर्शन –धारक साधु। जो ये पाठ्यक्रम कर रहे हैं वे छद्मस्थ मनुष्य के साथ दो चक्षु बन जाते है। चक्षुष्मान वह है जो अपने श्रुतज्ञान रूपी चक्षु से तत्त्व को सम्यक् रूप से जानता है। मुख्य नियोजिका साध्वी श्री विश्रुतविभाजी ने अपने प्रेरणा पाथेय में फरमाया कि सभी स्कॉलर्स एक–एक आगम का तीन से पांच वर्ष तक विशेष अध्ययन करे, उसमें पारंगत हो, आगमधर बने। शासनगौरव साध्वी श्री कल्पलताजी एवं साध्वी श्री जिनप्रभाजी ने भी विशेष प्रेरणा दी।

दिनांक 1 अक्टूबर को परम पूज्य आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में मुख्य प्रवचन के दौरान आयोजित जैन स्कॉलर दीक्षांत समारोह में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, जैन स्कॉलर परियोजना निदेशिका डॉ. मंजु नाहटा तथा जैन स्कॉलर संयोजिका श्रीमती पुष्पा बैद ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्य प्रवर ने इस संदर्भ में फरमाया – 'अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा जैन स्कॉलर का उपक्रम चलाया जा रहा है। ज्ञान, विकास, वैदुष्य विकास की दृष्टि से यह एक अच्छा कार्य है। जैन दर्शन का वैदुष्य होना उपलब्धि हो जाती है। जैन स्कॉलर्स में जैन दर्शन का वैदुष्य आगे से आगे निखरता जाए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का यह उपक्रम खूब अच्छे रूप में आगे बढ़ता रहे।'

कार्यक्रम के उपरांत जैन स्कॉलर के त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने वाले तेरह संभागियों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र देकर ''जैन स्कॉलर'' डिग्री प्रदान की गई। दिनांक 4 अक्टूबर को कार्यशाला संपन्न हुई। इस कार्यशाला को सफल बनाने में सुश्री रंजना गोठी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। **सन् 2017-18 के जैन स्कॉलर योजना के एवं दीक्षांत समारोह के प्रायोजक स्व. श्री डालमचन्दजी तारादेवी सुराणा परिवार, कोलकाता का अ.भा.ते.म.मं. परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद।**

डिग्री प्राप्त जैन स्कॉलर संभागी सूची

1. श्रीमान विकास कुमार गर्ग – दिल्ली
2. श्रीमती राजु दुगड़ – सूरत
3. श्रीमती पुष्पा बरड़िया – हैदराबाद
4. श्रीमती विमला डागलिया – मुम्बई
5. श्रीमती मंजु बैद – दिल्ली
6. श्रीमती विमला सिंघवी – सूरत
7. श्रीमती निर्मला नौलखा – मुंबई
8. श्रीमती प्रेमलता नाहर – अंकलेश्वर
9. श्रीमती मंजु सेठिया – सूरत
10. श्रीमती सुनीता चौपड़ा – मुंबई
11. श्रीमती इन्दिरा धींग – मुंबई
12. श्रीमती बीना भांडिया – जयपुर
13. सुश्री पूर्णिमा चोरड़िया – लाडनूं

आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत तत्त्वज्ञान तेरापंथ दर्शन प्रशिक्षण शिविर

जीव अजीव ओलख्यां बिना, मिटे नहीं मन रो भर्म।
समकत आयां विण जीवणे, रूके नहीं आवता कर्म।।

आचार्य भिक्षु ने लिखा है कि जीव अजीव की पहचान हुए बिना मन का भ्रम नहीं मिटता और सम्यकत्व आए बिना कर्म का निरोध नहीं होता। सम्यक्त्व की प्राप्ति और आते हुए कर्मों की श्रृंखला को तोड़ने के उद्देश्य से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत तत्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन का प्रशिक्षण शिविर दिनांक 30 सितम्बर, 1 व 2 अक्टूबर 2018 को पूज्य प्रवर के सान्निध्य में माधावरम् चैन्नई में आयोजित किया। जिसमें 41 केन्द्रों से तत्वज्ञान के छठे एवं तेरापंथ दर्शन के पांचवे वर्ष के 102 परीक्षार्थियों ने भाग लिया।

मध्यान्ह 2 बजे शिविर का शुभारम्भ महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मंगल आशीर्वाद से हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अपने ओजस्वी वक्तव्य से शिविर का उद्घाटन किया। राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती शांता पुगलिया ने बहनों को मंगल भावना संप्रेषित की। चैन्नई महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती कमला गेलड़ा व चैन्नई तत्त्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन संयोजिका श्रीमती शांता गेलड़ा ने अपनी भावनाएं प्रस्तुत की।

2.30 बजे मौखिक परीक्षा प्रारम्भ की गई। सायं 8 बजे तत्त्वज्ञान के परीक्षार्थियों को लघु दंडक, संजया नियंठा, कायस्थिति व गतागत का प्रशिक्षण ए.बी.सी.डी. ग्रुप के आधार पर क्रमशः श्रीमती दीपाली सेठिया, श्रीमती उर्मिला सुराणा, श्रीमती सुशीला सुराणा, श्रीमती मंजु बरड़िया तथा श्रीमती शांति बांठिया तथा तेरापंथ दर्शन में अनुकम्पा की चौपाई को श्रीमती कुसुम बैंगाणी ने आख्यायित किया।

1 अक्टूबर को लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। इससे आगे का सत्र आचार्य प्रवर के प्रवचन से प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अपने ओजस्वी वक्तव्य से तत्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन पाठ्यक्रम से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पूज्य प्रवर के सम्मुख प्रवचन पंडाल में प्रस्तुत की। इसी सत्र में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली बहनों को राष्ट्रीय अध्यक्ष व महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया द्वारा सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व तेरापंथ दर्शन/तत्वज्ञान निदेशक श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने किया।

मध्यान्ह 12.45 बजे बहनों को पूज्य प्रवर की विशेष सेवा का मौका मिला। आपने आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया जो अध्ययन किया है वह आगे बढ़ता रहे। ज्ञान का और अधिक विकास हो। अध्ययन पूरा होने के पश्चात् सम्बन्धित पुस्तकों तथा पन्नवणा, भगवती व तत्वार्थ सूत्र का भी स्वाध्याय करें। जैन विद्वान अधिक बनें इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए जैन स्कॉलर का कोर्स भी कर सकते हैं। आचार्य प्रवर ने आशीर्वाद देते हुए अ.भा.ते.म.मं. के इस उपक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

मध्यान्ह 2 बजे श्रद्धेया महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के सान्निध्य में ''ज्ञान की सूई-श्रद्धा का धागा'' विषय पर सत्र रखा गया। इस सत्र के प्रारम्भ में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा ने ''जैन स्कोलर'' कोर्स करने की बहनों को प्रेरणा दी। सुश्री प्रज्ञा ने अपने अनुभव बताते हुए कहा इस कोर्स को करने से मैं नेगेटिव से पोजिटिव व माइनस से प्लस की तरफ बढ़ी हूँ। साध्वी श्री जिनप्रभाजी ने मार्ग दर्शन देते हुए कहा हम इतने मुश्किल से थोकड़े सीखते है, अब इनका संरक्षण करना है। इसके लिए नियमित क्रम बनाना है, पुनरावर्तन करना है। बहनें जैन स्कोलर व जैन विश्व भारती के कोर्स से जुड़े। जो बहनें यह कोर्स नहीं कर सकती वे थोकड़ों को सघन बनाने के लिए नए कोर्स के लिए तैयार हो जाए। ज्ञान को कंठस्थ करने के लिए एक सामायिक का संकल्प भी कर सकती है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने बहनों को उद्बोधन देते हुए कहा - प्राकृत भाषा में आता है ''नाणं पयासयरमं'' ज्ञान प्रकाश करने वाला होता है, अज्ञान अंधकार है। ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति अलौकिक बनता है। जैसे जैसे श्रुतज्ञान की तरफ बढ़ता है वैसे-वैसे उसके कषाय शांत होते जाते है। यही स्थति ज्ञान पिपासु बहनों की हो रही है आपको ज्ञान की गहराई में आगे जाना होगा। बहनें ध्यान दें कि ये थोकड़ा कहाँ से आया है? इसका आधार क्या है?

बढ़ते कदम

योग के 25 प्रकार है ये आगम में कहाँ आया है? आगम का हिन्दी अर्थ पढ़े, पन्नवणा, भगवती पढ़े तब आपको लगेगा हम थोकड़े नहीं आगम पढ़ रहे हैं। बहनें अपना पुरुषार्थ जगाएं, मार्ग खोजें और मंजिल पर पहुँचे। महिला मंडल सतत जागरूक है। व्यवस्था पक्ष मजबूत है। साध्वी प्रमुखाजी और साध्वी जिनप्रभाजी के बीच निरन्तर चिन्तन चलता है और आपको मार्ग दर्शन मिलता रहता है। तत्त्वज्ञान से कर्मों की निर्जरा होती है, करूणा बढ़ती है और आत्मा उज्जवलता की तरफ बढ़ती है। स्वयं आलोकित होकर दूसरों को आलोकित करें यही लक्ष्य रहना चाहिए। साध्वीवर्या जी ने बहनों को दिशा निर्देश देते हुए कहा - महिला मंडल का यह अच्छा उपक्रम है। ज्ञान का आना जाना क्षयोपशम भाव है इसे बढ़ाओ, पढ़ाओ और जीवन में उतारो। बहनें साधु-साध्वियों को पढ़ाने योग्य हो गई है देखकर प्रसन्नता का अनुभव होता है।

असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी ने फरमाया अ.भा.ते.म. मंडल महिलाओं की एकमात्र संस्था है इसकी एक महत्त्वपूर्ण और स्थायी योजना है ''आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना'' आचार्य श्री इसे एक महत्त्वपूर्ण और रचनात्मक योजना मानते है। महिलाओं को आगे बढ़ाने का यह एक महान उपक्रम है। साध्वी जिनप्रभाजी के श्रम और बहनों की सुखद अनुभूति को देखकर सात्विक गौरव की अनुभूति होती है। व्यवस्था पक्ष से जुड़ी हुई बहनें भी श्रम करके नेटवर्क से कार्यक्रम को चलाती है। 137 केन्द्रों में काम हो रहा है। जिन बहनों में अर्हता है जैन स्कोलर की तरफ आगे बढ़े। आपश्री ने फरमाया श्रुतज्ञान व्यक्ति का बहुत बड़ा आलम्बन है। सूई खो न जाए इसीलिए डोरा डाला जाता है वैसे ही श्रुतज्ञानी व्यक्ति संसार में भटकता नहीं है। ज्ञान की अर्हता कुछ न कुछ सब में होती है। नन्दी सूत्र के अनुसार :- ज्ञान का एक अंश प्रत्येक व्यक्ति में होता है। ज्ञान से हर तत्व को समझ सकते है, दर्शन से आस्थावान बनते है, आत्मा में अनंत ज्ञान, दर्शन चारित्र है बस उद्घाटित करने की जरूरत है इसके लिए नियमित चितारना करे। आगे के कोर्स से जुड़े। घर में एक-एक बोल चलाएं, दर्शन की घटनाओं और स्थापनाओं को समझा जाए। भिक्षु विचार दर्शन पढ़ें। बहनें दर्शन व तत्त्व से घर के माहौल को बदलने का प्रयास करें। भाईयों की संख्या कम है वह भी बढ़े इस और ध्यान दें। ज्ञान को अपने भीतर आत्मसात करने का प्रयास करें। इसके लिए आलस्य, निद्रा, शोक और दुःख से दूर रहना होगा इससे स्मृति अच्छी रहेगी। तेरापंथ महिला मंडल को इसके लिए शुभकामना, आशीर्वाद। तेरापंथ दर्शन/तत्त्वज्ञान निर्देशिका व श्राविका गौरव श्रीमती पुष्पा बैंगानी के लिए आपने फरमाया कि पुष्पा जैन भारती की संपादक है इस कोर्स की निर्देशक है व घर को भी संभालती है खूब श्रम कर रही है। सभी बहनें धर्म की सेवा करके संघ की सेवा करे और धन्यता का अनुभव करें

दोपहर 3.30 बजे तत्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन निदेशक पुष्पा बैंगानी ने 'भ्रम विध्वंसन' के आधार पर ''मिथ्यात्वी की क्रिया'' विषय का विश्लेषण किया। रात्रि 8 बजे साध्वी प्रबुद्धयशाजी ने बहनों को तेरापंथ के सार्वभौम विचार एवं इसका बदलता स्वरूप इस विषय का विवेचन किया और समझाया कि तेरापंथ का जो भी विकास हुआ है उसमें तेरापंथ का सार्वभौम सिद्धांत ही आधार बना है परिवर्तन खराब नहीं है बस नीति निर्मल हो और प्रक्रिया शुद्ध हो।

2 अक्टूबर प्रातः 8 बजे समणी परिमल प्रज्ञा ने बहनों को ''कर्म सिद्धान्त '' विषय पर प्रशिक्षण दिया। 9.30 बजे साध्वी जिनप्रभाजी ने बहनों को विशेष उद्बोधन दिया। इसमें अनेक प्रश्नों को समाहित किया गया। राष्ट्रीय पूर्वाध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा, प्रशिक्षिकाओं में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या श्रीमती लता जैन व व्यवस्था पक्ष में श्रीमती उषा बोहरा का विशेष सहयोग रहा। श्रीमती शांति बांठिया का भी प्रशिक्षक के रूप में पूर्ण सहयोग रहा। चैन्नई महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कमला गेलड़ा, तत्वज्ञान संयोजिका श्रीमती शांता गेलड़ा, चैन्नई म.मं. उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जी हिरण व उनकी पूरी टीम, सुभद्रा लुणावत, श्रीमती सुनीता रायसोनी, श्रीमती दमयंती बाफना, श्रीमती कल्याणी डूंगरवाल, श्रीमती अर्चना कटारिया, श्रीमती मंजू दक, श्रीमती सुमन बरमेचा, श्रीमती लता चौरड़िया, श्रीमती उषा धोका का शिविर संचालन में पूर्ण सहयोग रहा। चैन्नई महिला मंडल व प्रवास व्यवस्था समिति के सहयोग से यह आयोजन सफल रहा। सबके प्रति हार्दिक आभार, कृतज्ञता।

इस शिक्षा परियोजना एवं शिविर में आर्थिक सौजन्य प्रदान करने वाली **तत्वज्ञ श्राविका श्रीमती रतनीदेवी गोठी, श्रीमती सुमन सुमतिचंदजी गोठी परिवार, सरदारशहर-मुंबई के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।**

आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल एवं स्तंभ का लोकार्पण

भुज – श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल भुज द्वारा रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में मुनिश्री डॉ.मदनकुमारजी और मुनि सिद्धार्थकुमारजी के सान्निध्यमें राजन शो-रूम के पास आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल का लोकापर्ण किया गया। लोकार्पण पूर्व तेरापंथ भवनसे शहर के मुख्य मार्गों पर रैली का आयोजन किया। मुनिश्री द्वारा प्रेरणात्मक वक्तव्य दिया गया। महिला मंडल की बहनों के द्वारा सुंदर गीतिका प्रस्तुत की गई। विशिष्ट महिलाशक्ति का सन्मान किया गया। ज्ञानशाला की बालिकाओं के द्वारा कन्या सुरक्षा पर सुंदर माइम एक्ट तथा गीतिका प्रस्तुत की गयी।

स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती लताबेन शाह और उनकी पूरी कार्यकारिणी टीम के सक्रिय सहयोग से भुज मंडल ने छोटा क्षेत्र होने के बावजूद अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कन्या सुरक्षा सर्किल निर्माण की महत्त्वपूर्ण परियोजना को सफलतापूर्वक सम्पादित किया।

जयपुर – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा स्तंभ का लोकार्पण तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम द्वारा श्रद्धेय मंत्री मुनि प्रवर से मंगल पाठ सुनकर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद, कोषाध्यक्ष श्रीमती सरिता डागा, ट्रस्टी श्रीमती सौभाग बैद, सी-स्कीम महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती सुशीला चौपड़ा, मंत्री श्रीमती कनक दुधोडिया, उपाध्यक्ष श्रीमती प्रेम दुगड़, श्रीमती ममता चौपड़ा, जयपुर शहर मंत्री श्रीमती शकुंतला चौरडिया, सभा मंत्री श्रीमान राजेन्द्र जी बांठिया एवं शिक्षा समिति अध्यक्ष श्रीमान नरेशजी मेहता एवं मंडल की बहनो की उपस्थिति में नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री जी द्वारा रचित गीतिका (गांधी के पुण्य वतन में) का संगान अमृतवाणी स्वर संगम प्रतियोगिता 2018 की विजेता अभयमती भंसाली द्वारा किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद जी कच्छारा ने मंडल को बधाई देते हुए कहा श्रद्धेय मंत्री मुनि प्रवर यहाँ विराज रहे है। आप लोगो को प्रत्यक्ष ऊर्जा मिल रही है। इसलिए शायद जयपुर वाले इतना काम कर रहे है। अभी अभी अधिवेशन हुआ है आपको पुनः ऊर्जा के साथ आगे बढ़ना है और आगे बढ़ते हुए आपने सर्वप्रथम आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा स्तंभ का उद्घाटन करते हुए नई दिशा में कदम उठाया है। कन्या सुरक्षा स्तंभ के माध्यम से एक संदेश लोगो तक पहुंचे और उनकी मानसिकता बदले यही हमारा उद्देश्य है। सी-स्कीम अध्यक्षा श्रीमती सुशीला जी चौपड़ा ने सभी का स्वागत किया एवं बताया कि अब तक सी-स्कीम महिला मंडल द्वारा एक सर्किल एवं तीन स्तंभ तथा तीन फिजियोथेरेपी सेन्टर बनाये गये है। महिला मंडल और कन्या मंडल की सराहनीय उपस्थिति रही!

आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सैन्टर का उद्घाटन

जयपुर – तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम जयपुर द्वारा एक और फिजियोथेरेपी सेन्टर दिशा स्कूल (विशेष बच्चो के लिए संचालित) में प्रारम्भ किया गया। स्कूल में 170 बच्चे है। उन बच्चो को हररोज फिजियोथेरेपी की जरूरत होती है।बच्चो की जरूरत के हिसाब से मशीने मंगवाई गई। श्रद्धेय मंत्री मुनि प्रवर का मंगल पाठ सुनकर इस फिजियोथेरेपी केंद्र का शुभारंभ राष्ट्रीय ट्रस्टी सौभाग जी बैद, सभा मंत्री राजेन्द्रजी बांठिया, युवक परिषद अध्यक्ष संजीवजी कोठारी, टी.पी.एफ अध्यक्ष अनिलजी भंडारी, सी-स्कीम अध्यक्ष श्रीमती सुशीला चौपड़ा, मंत्री श्रीमती कनक दूधोडिया एवं मंडल की बहनें की उपस्थिति में किया गया। श्रीमती सोभाग बैद ने सी-स्कीम महिला मंडल को बधाई प्रेषित की। स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती रेणु शर्मा ने सी-स्कीम महिला मंडल को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा की मंडल ने बच्चों के लिए बहुत अच्छा तथा उपयोगी कार्य किया है। अध्यक्ष सुशीला जी चौपड़ा ने कहा हम ऐसी जगह फिजियोथेरेपी सेन्टर खोलना चाहते है जहां सबसे ज्यादा आवश्यकता है। हमे यहां फिजियोथेरेपी सेन्टर खोल कर आत्म-संतुष्टि हुई है। इस प्रोग्राम का कवरेज **E.TV** राजस्थान में हुआ।

संगठन यात्रा

राजस्थान – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की उन्नति संगठन यात्रा के तहत राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्य डॉ. नीना कावड़िया ने पूर्व रा.का.स. श्रीमती पुष्पा कर्णावट, संघ संवाद मीडिया प्रभारी श्रीमती उषा चव्हाण, राजनगर महिला मंडल उपाध्यक्ष श्रीमती करुणा मेहता श्रीमती मीना नवलखा के सहयोग से मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों की सार संभाल की। सभी क्षेत्रों में बहनों द्वारा साध्वीप्रमुखाश्रीजी व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के सन्देश का वाचन किया गया। डॉ. कावड़िया ने अभातेममं की चारों योजनाओं की विस्तृत जानकारी, तेरापंथ दर्शन–तत्त्वज्ञान, व्यवस्थित रजिस्टर रखरखाव आदि की संवैधानिक जानकारी दी। साथ ही कन्या सुरक्षा सर्किल तथा फिज़ियोथेरपी सेंटर के लिये प्रेरणा दी।

गोगुन्दा

मंत्री मुनि मगन लाल जी स्वामी, घोर तपस्वी मुनि श्री सुख लाल जी स्वामी ,वर्तमान में शासन श्री रविन्द्र कुमार जी एवं साध्वी श्री दिव्यप्रभाजी, मलयप्रभाजी, मर्यादाश्रीजी की जन्म भूमि गोगुन्दा की संगठन यात्रा का शुभारंभ प्रेरणा गीत द्वारा किया गया। स्थानीय महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी जी व सभाध्यक्ष महेंद्र जी चोरडिया ने सभी का स्वागत किया। ज्ञातव्य हैं कि गोगुन्दा में चातुर्मास न होने के बावजूद भी बहनो में धर्म के प्रति अटूट आस्था, नियमित प्रतिक्रमण आदि आध्यात्मिक गतिविधिया सम्पादित की जाती है। पर्युषण में समणी मलयप्रज्ञाजी के सानिध्य में आध्यात्मिक अमृत वर्षा हुई । कार्यक्रम में लगभग 60 – 70 बहने उपस्थित थी। संचालन मंत्री श्रीमती नीलम चोरडिया ने किया ।

शिशोदा

छोटा परन्तु उत्साह व उमंग से परिपूर्ण क्षेत्र। महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता, सभाध्यक्ष श्री शांतिलालजी धाकड़ ने स्वागत किया साथ ही यथासम्भव महिला मंडल की फिजियोथेरेपी सेंटर खोलने की योजना के लिए सहयोग का आश्वासन दिया। परामर्शक श्री नाथूलालजी धाकड़ , उपाध्यक्ष श्री गणेशलालजी धाकड़, श्री रोशनलालजी धाकड़ आदि ने राष्ट्रीय अध्यक्ष को क्षेत्र की सारसंभाल के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। आभार मंत्री श्रीमती उषा ने किया ।

कोठारिया

तेरापंथ के इतिहास में अर्द्ध चातुर्मासिक प्रवास स्थल कोठारिया जहां आचार्य भिक्षु ने विशेष परिस्थितिवश नाथद्वारा से बीच चातुर्मास में विहार कर कोठारिया में शेष चातुर्मास सम्पन्न किया। स्थानीय महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती रेखा धींग ने सभी का स्वागत करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रति सार संभाल हेतु प्रसन्नता व्यक्त की। पूर्व अध्यक्ष श्रीमती मंजु कच्छारा, मंत्री श्रीमती यशोदा कच्छारा ने आभार ज्ञापित किया।

रेलमगरा

बड़े कालू जी स्वामी की जन्मस्थली रेलमगरा की यात्रा के दौरान स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा मेहता ने सभी का भावपूर्ण स्वागत किया। मंत्री श्रीमती हेमलता लोढ़ा, कन्या मण्डल संयोजिका सुश्री निकिता लोढ़ा एवं बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

सायरा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की पूर्व कार्यसमिति सदस्य श्रीमती पुष्पा कर्णावट व उषा चव्हाण ने सायरा में विराजित मुनि श्री धर्मेश कुमार जी एवम सहवर्ती मुनि श्री के दर्शन किये। छोटे से अनुरोध पर पूरे गांव की महिलाएं एकत्रित हुई। यहाँ कुछ वर्षों से शिथिलता के कारण सक्रियता नही रही। शाखा सारसंभाल सम्बन्धित विचार विनिमय किया गया एवम जागरुकता की विशेष प्रेरणा दी गयी।

थामला

महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती सुखी देवीजी सोनी ने स्वागत व मन्त्री श्रीमती सुशीला जी चपलोत ने आभार व्यक्त करते हुए डॉ. नीना कावड़िया एवं टीम की संगठन यात्रा को सराहते हुए यथासम्भव कार्य करने का विश्वाास दिलाया ।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता नवम्बर 2018

सन्दर्भ ग्रंथ : महाप्रज्ञ प्रबोध – 1 से 15 पद्य अर्थ सहित
तेरापंथ का इतिहास पुष्ठ 241 से 266 तक
(बाल्यकाल से वंदन न किया जाए तक)

प्रिय बहनों,

तेरापंथ प्रबोध प्रश्नोत्तरी के माध्यम से हमने स्वाध्याय के मार्ग पर अग्रसर होते हुए एक वर्ष का ज्ञान निर्जरा का सफर सानन्द तय किया है। इस यात्रा में हम आगे यात्रायित होते हैं मुनिश्री बुद्धमलजी द्वारा रचित तेरापंथ का इतिहास व मुख्य नियोजिका साध्वी श्री विश्रुत विभाजी द्वारा रचित महाप्रज्ञ प्रबोध के साथ, जहाँ हम आचार्य श्री भारमलजी, आ. श्री रायचंदजी, आ. श्री जीतमलजी, व आ.श्री महाप्रज्ञजी के श्रद्धा समर्पण, अनुशासन, संयम, उपशम भाव, बहुश्रुत, साहित्यकार, कवि आदि विशेषताओं से सम्पन्न जीवन वृत का स्वाध्याय कर अपने जीवन को आलोकित करेंगे। सम्पूर्ण तेरापंथ समाज श्रद्धा भाव के साथ इस प्रश्नोत्तरी में संभागी बनें।

प	ग	थ	सी	त्यं	कृ	ष	ऊ	रा	म	ता	सै	मी
रि	च	त्न	फ	ल	तु	डा	णी	स	त्य	शो	ध	ब
ष्ठा	प	यः	पा	न	घ	वा	जि	निं	प	अ	ई	य
प	ज	प	भा	म	तो	रा	ता	जी	से	व	अः	ल
न	भैं	ठ	गौ	मा	ज	ऐ	औ	ख	वि	ता	ए	अ
म	आ	ता	प्र	न	र	झौ	ड	छ	झ	षा	अं	कु
हा	स	ज्ञा	ग	मो	र्म	य	ऊं	स	दि	थ	गू	तो
रा	द	र	ज	धु	शा	शि	न	गा	त्या	पी	र	भ
बी	र्श	ज्यो	ति	के	न्द्र	ता	क्षा	ते	सी	ग्र	ह	य
ठो	न	रि	ष	गु	त्र	त्री	द	र	त	फ	ह	ल
रा	के	न्द्र	उ	र्ध्वा	रो	ह	ण	बा	मी	ली	प	र
ना	न्द्र	र्न	रा	नी	मं	ने	श	ब्द	वा	ठा	पु	टा
ध	पा	डि	हा	री	य	थि	उ	ला	लि	मा	ख	त्र

अ. शब्द अन्वेषण (Word Search) :–

प्रश्नों के उत्तर खोज कर चिन्हित करें व रिक्त स्थान में भरें :–

1. संभवतः ..... आचार्य प्रवर की मस्तिष्कीय पुष्टता में निमित्त बना हो।
2. भीखणजी का वि. सं. 1815 का चातुर्मास .....
3. वर्तमान की भाषा में प्रतिज्ञा को ..... कह सकते हैं।
4. अहिंसक को ..... होना ही चाहिए।
5. अस्थाई अर्थात् .....
6. ..... जीवन भर चलने वाला अनौपचारिक उपक्रम है।
7. मर्यादा पत्र का निर्माण व युवाचार्य की नियुक्ति का कार्य ..... में सम्पन्न हुआ।
8. निसर्गतः मुक्त आकाश को देखना ..... का माध्यम बन गया
9. लघु शंका निवृत्ति .....
10. स्वामीजी ने वि.सं. 1857 आश्विन कृष्णा 8 को ..... आख्यान की रचना की।
11. बालक नथमल की जिज्ञासु वृत्ति ने ..... की गहराई में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त किया।
12. जीने की इच्छा .....
13. लेख पत्र पर ..... संतों के हस्ताक्षर थे।

14. पीनियल ग्लैण्ड .....
15. अरूणाई .....

ब. प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दें :-

1. मुनि टोकरजी ने लेख पत्र पर हस्ताक्षर क्यों नहीं किये ?
2. भारमलजी स्वामी के अनुसार बालिका को तत्व-ज्ञान सिखाने का अर्थ
3. आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की दोनों बहनों का स्वभाव कैसा था?

स. किसने किससे कहा :-

1. आप अत्यन्त स्वार्थी हैं।
2. मेरे ललाट के मध्य भाग में रत्न मणि है।
3. इसका स्वभाव बड़ा विशुद्ध और सुन्दर है।

नोट : उत्तर पुस्तिका पर अपना नाम पता एवं फोन नं. अवश्य लिखें।
उत्तर महिने की 25 तारीख तक श्रीमती रमन पटावरी के पते पर अवश्य पहुँच जाए।
उत्तर फुल साइज पेज पर हाशिया छोड़ते हुए शुद्ध एवं साफ लिखें।
प्रश्न का उत्तर जितना पूछा जाए उतना ही दें।

श्रीमती रमन पटावरी
SILVER SPRING,
JBS 5 HALDEN AVENUE,
BLOCK - 1, 17-C, KOLKATA - 700105
मोबाईल : 9903518222 / 033-40620395
ई-मेल : raman.patawari@gmail.com

अक्टूबर माह के प्रश्नों के उत्तर

अ. बाएं से दाएं

1. कपाट
4. हरी भरी
5. दीपांजी
7. रूघनाथजी
9. चतरोजी
11. चन्द्रप्रभ
13. निरवद्य
15. दीक्षा
17. व्यापक
18. नमस्कार

ऊपर से नीचे

2. पापभीरू
3. लाभ
4. हरनाथ जी
6. पांच
8. जीत
10. तत्वनिरूपण
12. प्रज्ञा
14. वर
15. दीवान
16. करार

ब.

1. अमूल्य
2. अर्हत
3. अल्पता
4. अनुगमन
5. असंयम
6. अनुषंगिक
7. अधर्म
8. मधजी
9. महरबानी
10. अंगारे
11. मर्यादाओं
12. अजातशत्रु
13. मनुष्य

सितम्बर माह की प्रश्नोत्तरी के 10 भाग्यशाली विजेता

1. जतन बैद, जोराहट
2. सीमा बैद, किशनगढ़-अजमेर
3. शालिनी जैन, ईरोड़
4. कमला बैद, नोएड़ा
5. नीता सेठिया, साऊथ कोलकाता
6. पुष्पा देवी सालेचा, बालोतरा
7. मैना कांठेड़, भीलवाड़ा
8. मंजु पटवा, अहमदाबाद
9. आरती जैन, भिवानी
10. मीना नौलखा, चलथान-सूरत

सर्वाधिक प्रविष्टियाँ बालोतरा से 121 व उधना से 51 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई।

रास्ते की सेवा ''भावना''

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा रास्ते की सेवा ''भावना'' का उपक्रम पुनः प्रारम्भ हो रहा है। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के शुभ आशीर्वाद एवं मातृ हृदया, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति असाधारण साध्वी प्रमुखा श्रीकनकप्रभाजी की कृपा से कर्म निर्जरा के इस महनीय उपक्रम से जुड़ने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। अतः आप सभी शाखा मंडलों की बहनों से विनम्र अनुरोध है कि सेवा के इस महायज्ञ में जुड़े और गुरु सन्निधि का लाभ उठाये। संभवतः चातुर्मास समाप्ति के तुरंत पश्चात् यह उपक्रम प्रारंभ हो जायेगा और शाखा मंडल की बहनें 1 दिसम्बर 2018 से सेवा देने हेतु अपने नाम नोट करवा दे। प्रत्येक शाखा मंडल से 4-4 बहनों के समूह में आकर 7 दिन सेवा प्रदान करें।

विशेष : शारीरिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ बहनों को ही भेजने का प्रयास करे। युवती बहनों को ही प्राथमिकता दे। नाम देने हेतु निम्न बहनों से सम्पर्क करें :-

निदेशिका

श्रीमती शोभा दुगड़
+91 98313 00006

संयोजिका

श्रीमती कांता तातेड़
+91 98206 48887

श्रीमती लीना दुगड़
+91 98307 58882

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को मिलने वाला अनुदान

2,00,000	स्व. श्री डालिम चंदजी तारादेवी सुराणा परिवार (कोलकाता) द्वारा जैन स्कोलर योजना हेतु सप्रेम भेंट।
1,51,000	श्रीमती पाना देवी बैद के प्रपौत्र एवं श्रीमती ख्याति मानवर्धन के पुत्र जन्म उपलक्ष में श्री मोहनलाल रणजीत सिंह जी बैद जनसेवा कोष हेतु सप्रेम भेंट।
51,000	श्रीमान विमलजी कटारिया के जन्मदिवस के उपलक्ष में श्रीमती मधु चिराग, यश कटारिया (बेमाली-बैंगलोर) द्वारा 'भावना' सेवा हेतु सप्रेम भेंट।
25,000	गुलाबबाग महिला मंडल द्वारा रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष में सप्रेम भेंट
21,000	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बगड़ी द्वारा सप्रेम भेंट।
21,000	श्रीमान प्रकाशजी, शेखर, सुशील चिण्डालिया (बीरपुर-बैंगलोर) द्वारा 'भावना' सेवा हेतु सप्रेम भेंट।
11,000	श्रीमती शशि मांगीलालजी बोहरा-पटना द्वारा 'भावना' सेवा हेतु सप्रेम भेंट।
11,000	सिंधिकेला महिला मंडल (ओडिशा) द्वारा 'भावना' सेवा हेतु सप्रेम भेंट।
11,000	डीफू महिला मंडल द्वारा 'भावना' सेवा हेतु सप्रेम भेंट।
5,100	दिनहटा महिला मंडल द्वारा 'भावना' सेवा हेतु सप्रेम भेंट।
5,100	दिनहटा महिला मंडल द्वारा 'आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना' हेतु सप्रेम भेंट।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार !

महामंत्री कार्यालय : श्रीमती नीलम सेठिया - 28/1, शिवाया नगर, 4th Cross, रेड्डीयुर, सेलम-636004, तमिलनाडु
मो. : 099524 26060 ईमेल neelamsethia@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती सरिता डागा - 45, जेम एनक्लेव, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर - 302 017
मो. : 094133 39841 ईमेल sarita.daga21@gmail.com

नारीलोक हेतु सम्पर्क करें : श्रीमती सौभाग बैद मो. : 080031 31111 श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा मो. : 096199 27369
नारीलोक देखें website : www.abtmm.org